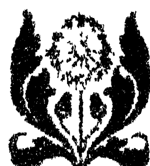
जिनगुण-मणिमाला ।



रचयिता—

आचार्य श्रीमद् विजयलब्धिसूरिजी ।

23425

०।.२ ३।।

गूजरात विद्यापीठ ग्रंथालय
[गुजराती कॉपीराइट विभाग]
अनुक्रमांक १३५७६ वर्गीक
पुस्तकनुं नाम જિનગુણ-મણિમાલા
विषय ५३१:४

श्री आत्म कमल जैन ग्रन्थमाला—पुष्प १५.

श्री जिनगुण—मणिमाला।

(श्रीमहावीर स्नात्र, श्रीवासुपूज्य पंचकल्याणक, अने अष्टप्रकारी पूजाओ तथा स्तवन संग्रह।)

संयोजक—

सद्धर्म्मोद्धारक न्यायाम्भोनिधि जैनाचार्य्य
श्रीमद् विजयानन्दसूरीश्वरजीना पट्टालंकार सद्धर्मरक्षक
जैनाचार्य श्रीमद् विजयकमलसूरीश्वरजीना पट्टधर
आचार्य श्रीमद् विजयलब्धिसूरिजी।

सहायक—

बुहारी निवासी मर्हुम मणिबहेन सूरचंद।

प्रकाशक—

श्री महावीर जैन सभा—खंभात।

वीर संवत्-२४५२ | भेट | आत्म संवत्-३१
विक्रम सं-१९८३ | | इस्वीसन-१९२७

प्रकाशक—
अंबालाल जेठालाल शाह
सेक्रेटरी—
श्री महावीर जैन सभा।
खंभात।

ગુજરાત વિદ્યાપીઠ ગ્રંથાલય
અમદાવાદ
ગુજરાતી કૉપીરાઈટ-સંગ્રહ



मुद्रक—
रतीलाल केशवलाल शाह।
श्री वीरशासन प्रिन्टींग प्रेस
हाजापटेलनी पोळ
अमदावाद।

विषयानुक्रमणिका.

प्रस्तावना.



सज्जनो! आ पुस्तकनी अंदर संसारना त्रिविध तापने शमावनार, भवोदधि त्राता, समभावपीयूषपयोदधि, जगदुद्धारक, तत्त्वत्रयीदाता श्रीजिनेश्वर प्रभुना गुणग्राम करवामां आव्या छे. प्रभुना गुणग्राम ए अपूर्व भक्तिनुं अंग छे, अने भक्ति एज मुक्तिने आपनारी छे. जेना हृदयमां प्रभुभक्ति नथी ते हृदय हृदय नहीं किन्तु पत्थर छे. ते विना व्रत तप जप क्रियाकांड सर्व अरण्य रुदन जेवां फल शून्य छे. भक्ति वगरना माणसमां सम्यक्त्व पण न ज होइ शके, माटे दरेक प्राणीए प्रभु भक्तिमां लयलीन थवुं ए खास अगत्यनो विषय छे. भक्तिना बे प्रकारो छे, एक क्रिया रूपे अने बीजो स्तुतिरूपे, क्रियाना प्रकारथी स्तुतिनो प्रकार चित्तने अतिशय विकसित करनारो होय

छे, एज कारण छे के द्रव्यपूजानी स्वरूप हिंसा-
थी लागता दोषने भावपूजा धोइ नाखे छे, एट-
लुंज नहीं किन्तु अनर्गल पुण्यने प्राप्त करी आपे
छे. कोइ कोइ पुरुष अति विवेकवाळी आवी भ-
क्तिथी पुण्य पाप उभयनो नाश करी मुक्तिने पण
मेळवी शके छे, भक्तिने पोषवा माटे केटलीक
सदीयोथी आवी गुजराती हिंदी भाषानी पूजाओ,
प्रभुस्तुतियो, जुदा जुदा कवियोनी कलमथी ल-
खायली दृष्टिगोचर थाय छे. प्रथमनी सदीयोमां
आवी भाषामां आ विषयने पोषनार पुस्तको ल-
खायां होय एम जणातुं नथी. छतां य संस्कृत
भाषामां प्रभुस्तुतिने पोषण आपनार अनेक पु-
स्तको दृष्टिगोचर थाय छे, ते स्तुतिने आ अन्य
प्रणालिकाए पलटो खवराव्यो एटलोज नूतनता
छे. तेमां वळी हालना लोको केटलीक नाटकनी
चालोना रसीया बन्या छे, एटले ते लोकोने बीजां

अर्थशून्य गीतो गातां अटकाववाने, आवी पूजाउ, तथा स्तवनोमां, तेवा ज रागो मूकतां कारण मळे छे. अने प्रभु गुण गातां पोताना आत्मानो उद्धार करी शके छे. एम धारी आ पुस्तकना कर्तानुं खास लक्ष ए दिशामां वळतां अनेक पूजाउ अने घणा ज स्तवनो तेउश्रीए रच्यां छे. अने ते अनेक पुस्तकोमां मुद्रित थयेल छे, ते पुस्तकोमां आ पुस्तकथी वधारो थाय छे. आ पुस्तकनी अंदर प्रथम श्रीमहावीरस्नात्र दाखल करवामां आव्युं छे, तेमां वीरप्रभुना जीवनना टुंक सारांशनो समावेश करी प्रभुना गुण गाइ पोताना आत्माने पवित्र बनावतां हजारो आत्माउने पवित्र बनाव्या छे. त्यारपछी श्रीवासुपूज्यस्वामीना च्यवन जन्म दीक्षा केवलज्ञान अने मोक्षनुं वर्णन करतां पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय जैनरत्न व्याख्यान वाचस्पति आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलब्धिसूरीश्वरजीए पोता-

नी कविता शक्तिना परिचयनी साथे हृदयनी अपूर्व भक्तिने स्पष्ट करी बतावी छे. तेनी साथे बुहारी निवासी धर्मप्रिय श्रद्धालु सखी गृहस्थ शेठ झवेरचंद भाइनी विनंतीने मान आपी आ पूजानी रचना थइ एम छेवटना कलशथी स्पष्टीकरण कर्यु छे. तदनन्तर अष्टप्रकारीपूजा जेमां जिनेश्वरदेवनी आगळ कइ भावनाथी कयुं द्रव्य चढाववुं तेना स्पष्टीकरणनी साथे सुंदर रागो मूकी भक्तिवासित अंतःकरणोने मुग्ध बनावे एवा ढबनी आ अष्टप्रकारी पूजा दाखल करेलो छे त्यारपछी चोवीश तीर्थंकर महाराजनां बासठ स्तवनो जुदा जुदा रागमां भक्तिभावथी भरपुर उमेरी आ पुस्तकनी समाप्ति करवामां आवी छे. आवां सुंदर रसीलां कवितामयी साहित्यनां पुस्तको तथा तत्त्वना ग्रन्थो लखी पूज्यपाद प्रातःस्मरणीय जैनरत्न व्याख्यान वाचस्पति आचार्य महाराज श्रीमद् विजयलब्धि-

 १३५०७

सूरीश्वरजीए आपणी जैन समाजने वारे आभारी करी छे तेउनो अंतःकरणपूर्वक आभार मानवाना आपणा मानव कर्तव्यने आपणे कोइ पण दिवस भूलवुं न ज जोइए. अने साथे साथे अमारे ए पण कही देवुं जोईये के आ पुस्तकनी प्रसिद्धिमां बुहारीनिवासी शाह मोतीचंद सुरचंदे पोतानी व्हेन मणिव्हेन के जे सद्गत थयां छे. तेमणे करेली शुभ खातानी रकममांथी द्रव्य सहायता आपी आवा प्रभुगुणगर्भित साहित्यना पुस्तकमां वधारो कर्यो छे तेथी खरेखर ते प्रशंसाने पात्र छे.

प्रकाशक.

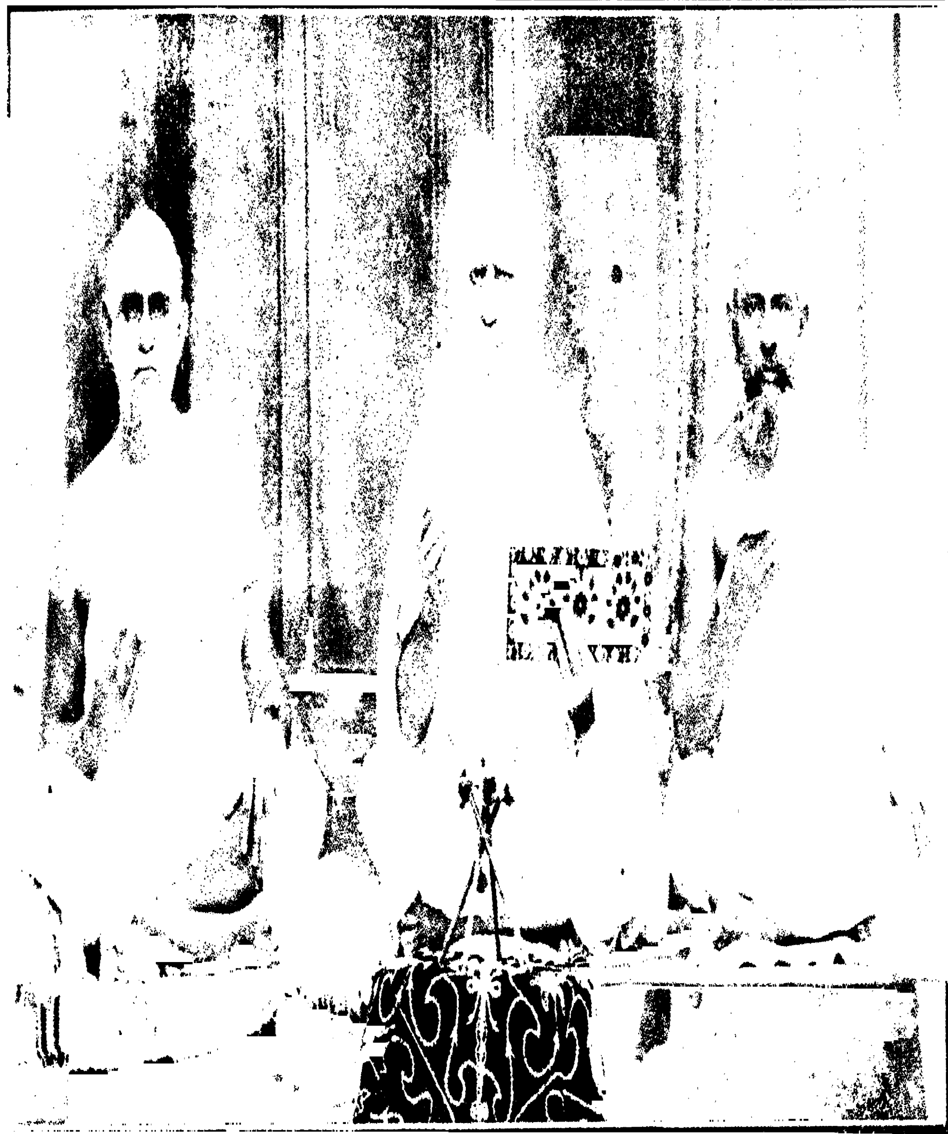
——:०:——

सद्गत गुरुदेवके चरणारविंदमें भक्तिपुष्पाञ्जली।

(राग-मत छेडो गाली दूंगीरे भरने दे मोहे नीर)

नमूं सूरि गुणगणके धारी, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥अंचली॥ गुरु विजयकमलसूरिराया, पाखंड प्रचार हटाया, वादिगज शिर सिंह ठाया रे, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥नमू०॥१॥ गुरु निस्पृह निडर कहाया, पापी दंभीको दबाया, शासन जोहर जगायारे, ब्रह्म-चारी शूरवीर ॥नमू०॥२॥जग सत्यप्ररूपक भारी, कालिकसूरि सुखकारी, हुए गुरु उनके अनुकारी रे, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥नमू० ॥३॥ नहीं मानमरतबा चाहे, गुरु कामकक्षको दाहे, श्रुतसागर नित्य अवगाहे रे, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥नमू०॥४॥ गुरु जीव दया गुण दरीया, अध्यात्म रससे भरीया, शासन रक्षण चित्त धरीया रे, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥नमू०॥५॥ परगुणगण श्लाघाकारी, निज-गुण श्लाघा नहीं प्यारी, हुए अनुपम श्रद्धाधारी रे, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥नमू०॥६॥ गुरु आज्ञा शिरसा धारी, कवितागुण प्रगति कारी, यह गुरुजी ! गुण तम भारी रे, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥नमू० ॥७॥ यह पुस्तक आप सम्हालो; निज बालकृतिको निहालो, कहे लब्धि भवभ्रम टालो रे, ब्रह्मचारी शूरवीर ॥ नमू० ॥८॥





—आचार्य—	—जैनाचार्य—	—आचार्य—
श्री विजयदानसूरिजी ।	* श्रीमद्-विजयकमलसूरीश्वरजी । *	श्री विजयलब्धिसूरिजी ।

"श्रीविजयानंदमद-श्रीमद्विजयकमलसूरिपादपद्मेभ्यो नमः।"

—जैनरत्न व्याख्यान वाचस्पति—

आचार्य श्रीमद् विजयलब्धिसूरिविरचित-

श्रीमन्महावीरस्वामिस्नात्र-पूजा



॥ दोहा ॥

सुरासुर नरेश्वरा, वहे अखंड जस आण ।
ऐसे विरजिणंदका, स्नात्र रचुं सुख खाण ॥ १ ॥
भूषण बिन [1]भूघन प्रभु, शोभे अति उछरंग ।
जिनके अद्भुत रूपको, देखी अनंग अनंग ॥ २ ॥

॥ इति आभूषण उतारण दुहा ॥

अभ्यंतर गुण महमहे, श्री जिननाथ अपार ।
इन गुणोंसें पूजना, कुसुमाभरण उतार. ॥ १ ॥

॥ इति कुसुमादि उतारण दुहो ॥

---

[1] शरीर.

जाणी जन्म जिणंद्का, मिली [१]मरुद्वर नाथ ।
करी स्नात्र सुराचले, तरीया भवजल पाथ. ॥१॥
तिम जिन पडिमा जिन गणी, अभिषेके जिनराज।
भावपूजा धरी प्राणीया, पामे ते शिवराज ॥ २ ॥
॥ इति अभिषेक दुहा ॥

अतिशयवंत भदंत जो, अनंत चतुष्टय खाण ।
तरण तारण जहाज सो, परमेश्वर पिछाण ॥ १ ॥

॥ कुसुमांजलीनी ढाल ॥
(राग—व्हाला वेगे आवोरे.)

शिवसुखकारीरे, जगदुःखवारीरे ।
व्हाला स्नात्र कीजिये होजी ॥
स्नात्र करे आतम पात्र थाय,
पात्र थये ऋद्धिसिद्धि मळे आय.
शिवसुखकारी०

---

१ देव.

॥ साखी ॥

"स्नात्र करी अर्चन करे, कुसुमे जिन शरीर।
देव सबी सुराचले, और हरे भवपीर."

व्हाला मारा मचकुंद चंपकमाल, व्हाला मारा कमलादि पुष्प रसाल, व्हाला मारा कुसुमांजली करी ख्याल, व्हाला मारा आदि चरणमें तुं भाल. ॥ शिवसुख० ॥ १ ॥

॥ प्रथम कुसुमांजली ॥

॥ नमोऽर्हत्० साखी ॥

"रयण सिंहासन स्थापकर, शांति जिणंद पधराय।
कुसुमांजली चरणे धरे, सो शिवपुर सुख पाय."

व्हाला मारा जिण तिहूं कालय सिद्ध, व्हाला मारा पडिमा गुण प्रसिद्ध, व्हाला मारा जिने कुसुमांजली दीध, व्हाला मारा दुरित तस दूरे कीध. शिवसुख० ॥ २ ॥

द्वितीय कुसुमांजली ॥

॥ नमोर्हत्० साखी ॥

" कृष्णा–गुरुवर–धूप धार, कुसुमांजली सुखकार।
भाव भक्ति चरणे धरी, पूजो नेमीकुमार. "

व्हाला मारा दश दिसी भ्रमर झंकार, व्हाला मारा शब्द संगीत मनोहार, व्हाला मारा सुरनरकृत प्रचार, व्हाला मारा सिद्ध कुसुमांजली सार शिवसुख० ॥ ३ ॥

॥ इति तृतीय कुसुमांजली० ॥

॥ नमोर्हत्० ॥ साखी ॥

" जलज स्थलज फूलोवरी, धरी उदक निज हाथ।
करी पार्श्व कुसुमांजली, भवी तुम बनो सनाथ.

व्हाला मारा कुसुमांजलीका विधान, व्हाला मारा भवांजली इसे मान, व्हाला मारा भाग्य उ-

दय तस जाण, व्हाला मारा जो सेवे मंगल खाण.
शिवसुख० ॥ ४ ॥

॥ इति चतुर्थ कुसुमांजली० ॥

॥ नमोऽर्हत्० साखी ॥

" कुसुमांजली भावे धरो, वीर चरण मोझार ।
उपकारी पूजन करे, जलदी खेवा पार. "

व्हाला मारा वीर चरण सुपसाय, व्हाला मारा आत्मकमळ विकसाय; व्हाला मारा सद्गुण लब्धि सुहाय. व्हाला मारा नव नवे मंगळ थाय.
शिवसुख० ॥ ५ ॥

॥ इति पंचम कुसुमांजली ॥

॥ ढाल दुसरो ॥

(तर्ज–पनीहारीकी)

समकित महाव्रत पालके मारा वालाजो,
वीश स्थानक आराध वालाजी ।

जवि जीव तारण कारणे मारा वालाजी,
तीर्थंकर पद साध वालाजी. ॥ १ ॥
जव तीजे जावदया धरी मारा वालाजी,
गये पुष्पोत्त विमान वालाजी।
जोगवी सुर सुख साम्यसे मारा वालाजी,
विश सागर स्थिति मान वालाजी ॥ २ ॥
माहृण कुंमपुर शोजता मारा वालाजी,
विप्र रिषजदत्त जाण वालाजी ।
देवानंदा तस प्रिया मारा वालाजी,
तस कुख तमहर जाण वालाजी. ॥ ३ ॥
माता स्वपन निहारती मारा वालाजी,
चउदश अति उदार वालाजी;
प्रथम गज अति शोजतो मारा वालाजी,
दूजे वृषज श्रीकार वालाजी. ॥ ४ ॥
सिंहवर कमला पांचमे मारा वालाजी,
विविध पुष्पकी माल वालाजी।

चंद्र सूर्य अति दीपता मारा वालाजी,

ध्वजा कलश विशाल वालाजी. ॥ ५ ॥

शमे पद्म सरोवरु मारा वालाजी,

क्षीर सागर अति सार वालाजी।

भवन विमान बारमे मारा वालाजी,

रत्नराशी तेरमे धार वालाजी. ॥ ६ ॥

अग्नि शिखा जोइ चउदमें मारा वालाजी,

देवानंदा जाग्रत थाय वालाजी।

पति हुतो मिथ्यामति मारा वालाजी,

नहीं तीर्थंकर भेद पाय वालाजी. ॥ ७ ॥

इण अवसर जंबूद्वीपे मारा वालाजी,

शक्र उपयोग ठाय वालाजी,

वीर प्रभुको देखकर मारा वालाजी,

हृदये हर्ष न माय वालाजी. ॥ ८ ॥

सिंहासनसे जायकर मारा वालाजी,

सनमुख पद सात आठ वालाजी।

ईषत अवनत गात्रसे मारा वालाजी,
बोले "नमुथ्थुणं"का पाठ वालाजी.॥ ए ॥
अवशिष्ट नीच गोत्रका मारा वालाजी,
पूरण करिया जोग वालाजी।
व्यासी दिनके अंतरे मारा वालाजी,
हरिणगमेषी संजोग वालाजी. ॥ १० ॥
जो जिनवर वंदन करे मारा वालाजी,
शुद्ध नावे मन वच काय वालाजी।
आत्म कमल निर्मल करे मारा वालाजी,
लिये लब्धि सर्व मिलाय वालाजी. ॥ ११ ॥
॥ स्नात्रीए चैत्यवंदन करवुं ॥

॥ ढाल त्रीजी

(राग–पहेले सुपनेजी गज देखे गजगामीनी)
आपे आणा रे इंद्र हरिण-गमेषीको,
अपहारो रे ब्राह्मणी कुखसे वीरको।

क्षत्री कुंडे रे सिद्धार्थ नृपति वसे,
इक्ष्वाकु रे तस कुल कुलोमें उल्लसे. ॥ १ ॥
पट्टराणी रे तास है त्रिसला गुणवती,
रूप शीले रे सर्व स्त्रीयोथी शोभती ।
तस कुखे रे वीर प्रभुने संचरो,
काल अनंते रे ए आश्चर्य दिले धरो. ॥ २ ॥
तीर्थपति रे भिक्षु कुलादिमां आवता,
जित जाणी रे इंद्र हुकम फरमावता ।
त्रिशला कुखे रे पुत्री रूपे जे गर्भ है,
कुखे ब्राह्मणी रे करणा तास संदर्भ है. ॥ ३ ॥
शिरे अंजली रे जोडी वचन सुणी मुदा,
हर्षित हृदये रे इंद्र थकी हुआ जुदा।
उत्तर रूपे रे जंबू भरते आवीया,
जिन देखी रे प्रीते शिर झुकावीया. ॥ ४ ॥
अवस्वापिनी रे निद्रा देइ मायने,
अबाधारे करमां लेइ जिनतायने ।

अशुभ पुद्‌गल रे हारी शुभ प्रक्षेपिया,
जलनां पात्र्या रे राजभवन इंद्र खेपिया. ॥ ५ ॥
त्रिशलाने रे निद्रा अवस्वापिनी दइ,
पुत्री रूपे रे गर्भ निज हाथे लइ ।
प्रभुजीने रे गर्भाशये पधरावता,
पुत्रीने रे ब्राह्मणी कुखमां ठावता. ॥ ६ ॥
देखे ब्राह्मणी रे स्वप्न हरण त्रिशला करे,
देखे त्रिशला रे चौद सुपन रुडीपरे ।
गजमतंगज रे गज देखे गजगामिनी,
अति व्हालो रे वृषभ देखे मध्यजामिनी. ॥ ७ ॥
सिंह सोहामणो रे तीजे स्वप्ने निहालती,
लक्ष्मी चोथे रे दिव्य स्वरूपमां भाळती।
दश दिशे रे जास सुगंधी महमहे,
भमर भ्रमरी रे, चारो तरफ गुंजी रहे ॥ ८ ॥
ऐसी माला रे विविध पुष्पतणी देखती,
तम–हर चंद्र रे जास किरण अती दीपती ।

 १३५७९

देखे सूर्य रे अन्धकार विमर्दनो,
गज भालक रे एतो खरो शीत कंदनो ॥ ९ ॥
ध्वजा कलश रे जोवे अति रलीयामणां,
होवे मंगल रे जो जोवे तस घर घणां ।
पद्म नामे रे सरोवर शोभा शी कहुं,
खूब आनंद रे कल्प सूत्र वांची लहुं ॥ १० ॥
क्षीर सागर रे तरंगे व्यापो रह्यो,
जोनारने रे हर्ष अति आपी रह्यो ।
वाजित्रना रे रवदेव सहित विमानको,
सुपन बारमे रे तेरमें रत्नको राशीको ॥ ११ ॥
अग्नि शिखा रे मानो आकाश पचावती,
आरस सोनुं रे निर्मलकार बतावती ।
कहे कंतने रे त्रिशला अंतिमजामीनी,
कंत कहेता रे तीर्थपति होशे जामीनी. ॥१२॥
जास नमशे रे सुरासुरनरेसरू,
होशे भावे रे त्रिभुवन तस आणा धरू ।

आत्मकमले रे ध्याशे जो जिन दिनमणि,
लब्धिधारी रे करशे गमन ते मुक्तिजणी. ॥१३॥

॥ दुहा. ॥

उत्तराफाल्गुनी ऋक्षसें, जबहुआ चंद्र संयोग।
त्रिज्ञानी प्रभु जनमीये, उच्च ग्रहोंके योग. ।१।
उजारा तीन लोकसें, प्रगटा सुख प्रकार।
नारक पण क्षण सुखीया, धन्य श्रीवीर अवतार. ।२।

॥ ढाल चौथी ॥

(आइ बसंत बहाररे.)

हुइ आणंद बहार रे प्रभु वीर जनमीये,
वीर जनमीये आसन हिलिये. ॥ हुइ. ॥अंचली. ॥
छप्पनदिक् कुमरी उपयोगे,
जाणी वीर अवतार रे ॥ प्रभु० ॥ १ ॥
दिशी विदीशीसे प्रीते आवे,
उर्ध्व अधोजी प्रका रे ॥ प्रभु० ॥ २ ॥

सखुतमातको प्रेमे प्रणमो,

आनंद अधिक लियो धार रे ॥ प्रजु० ॥३॥

अष्ट संवर्त वायु रज हरती,

अष्टसुगंध वृष्टीकार रे. ॥ प्रजु० ॥ ४ ॥

अष्ट कलश अष्ट दर्पण धारे,

अष्ट है चामर धार रे ॥ प्रजु० ॥ ५ ॥

आठ पंखा धरे चार दीपक करे,

चार है रक्षण कार रे ॥ प्रजु० ॥ ६ ॥

क॰ लीघर कर ससुतलाकर,

नवरावे शुचीकार रे ॥ प्रजु० ॥ ७ ॥

ससुत सालंकार करीने,

बांधे राखमी सार रे ॥ प्रजु० ॥ ८ ॥

ससुत शयनगृहमें स्थापी,

कहे जिन जीवो अपार रे ॥ प्रजु० ॥ ए ॥

आत्मकमल नक्ति विकसावी,

निजगृहलब्धि धार रे ॥ प्रजु० ॥ १० ॥

॥ दुहा ॥

चैतर सुदी तेरस दिने, जन्मे श्री जिनराय।
तब आसन हरी कंपीयो, लियो क्रोध चढाय.॥१॥
ज्ञान भये आनंद भयो, जाणी जन्म जिनंद।
घंट सुघोष बजावते, पामो परमानंद. ॥२॥
शेष घंट सब वाजते, जाणे देव समूह।
हुकम हुआ हम इंद्रका, जावे तस सम्मुह ॥३॥
पालक नाम विमानमें, बैठ इंद्र महाराय।
सर्व देव साथे मीली, क्षत्री कुंडमें आय. ॥४॥
जिन जननी शिरसा नमी, कहे न डरना माय।
प्रभु जन्म महोत्सव लिये,आया जीत मनाय. ॥५॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ राग धनाश्री. ॥

चोसठ सुरपति सार पूजे प्रभु,
चोसठ सुरपती सार. ॥ अंचली. ॥

अवस्वापीनी प्रभु मातको देकर,
बिंब धरी अनुकार ॥ पूजे प्रभु० ॥ १ ॥
पांच रूप कर प्रभुको लावे,
पांडुकवन मोझार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ २ ॥
सामग्री कलशादिक सघरी,
अरु अरु जाति प्रकार ॥ पूजे प्रभु० ॥ ३ ॥
शीला सिंहासने शक्र बैठे,
जिन लइ हर्ष अपार ॥ पूजे प्रभु० ॥ ४ ॥
अच्युतपति क्षीरोदधि आदि,
जलसे स्नान उदार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ ५ ॥
अनुक्रमे युं स्नात्र करंतां,
अंतमें शक्रका वार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ ६ ॥
इशानेंद्र प्रभु गोदमें लेवे,
शक्र होवे स्नात्रकार ॥ पूजे प्रभु० ॥ ७ ॥
चतुर वृषभ करी शृंगाष्टकसे,
अभिषेके क्षीर धार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ ८ ॥

गीत गान और तान प्रचारा,

हो रहा मंगलाचार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ ए ॥

एक क्रोड और उपर साइठ,

लाख कलश सुमार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ १० ॥

सर्व सामग्री इण विधि जाणो,

सूत्र कथित प्रकार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ ११ ॥

विविध नाट्य वाजींत्र विधिसे,

हो रहा थै थैकार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ १२ ॥

इस विध जन्म महोच्छव करके,

कमी कीया कर्मोका नार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ १३ ॥

जिनको जननी पास रखीने,

कीया नीद्रा अपहार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ १४ ॥

बत्तीश कोटी कनक मणि माणेक,

वस्त्र वृष्टी करी सार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ १५ ॥

जाय नंदीश्वर महोच्छव करके,

सीधाये स्वर्ग दुवार. ॥ पूजे प्रभु० ॥ १६ ॥

आत्म कमल निर्लेपताकारी,
जिन लब्धि सुखकार ॥ पूजे प्रभु० ॥ १७ ॥
राधनपुरमें रही चोमासा,
कीया स्नात्र लघु सार ॥ पूजे प्रभु० ॥ १८ ॥
(आ ढाळ कही कलश अभिषेक करवो.)

श्री आरती.

॥ राग-धनाश्री ॥

आरती वीरजिणंद करोने भवि !,
आरती वीर जिणंद ॥ अंचली ॥
आरती अरतिकंदको कापी,
करत है परमानंद ॥ करोने० ॥ १ ॥
सुर नरवर कर आरती जिनकी,
लीया है हर्ष अमंद ॥ करोने० ॥ २ ॥
भ्रमण करी भवि भास युं करती,
करो हरुं भव-भ्रमफंद ॥ करोने० ॥३॥

जन्म जरा मरणादिक मानो,
मुजमें पतंगका वृंद ॥ करोने० ॥ ४ ॥
आरती मंगल महावीर मंगल,
भाव भी मंगल कंद ॥ करोने० ॥ ५ ॥
आत्मकमल जलहलती ज्योती,
आरती लब्धिलहंद ॥करोने० ॥ ६ ॥

मंगळ-दीपक.

॥ रागिणी आशाउरी, ताल कहरवा ॥

भावोंसे भवि!, मंगळ दीप उतार ॥ अंचली ॥
झगमग झगमग ज्योत जलंती,
कर्म ज्वलन सूचीकार ॥ भावोंसे० ॥ १ ॥
महा भागसे महावीर मीलीये,
करले सेवा सार ॥ भावोंसे० ॥ २ ॥
महावीर कृत मंगळ दीपकसे,
होवे मंगलाचार ॥ भावोंसे० ॥ ३ ॥

अगर आदि आकर्षक धूप,

करी पूजो पुष्प प्रकार ॥ नावोंसे० ॥ ४ ॥

मिथ्या मारग महातमवारो,

समकित शुद्धिकार ॥ नावोंसे० ॥ ५ ॥

आत्म कमलमें केवल लक्ष्मी,

लब्धि तणो दातार ॥ नावोंसे० ॥ ६ ॥

इति आचार्यश्रीविजयलब्धिसूरिकृत श्रीमन्म-
हावीरस्वामि-स्नात्र पूजा समाप्ता.



" श्रीवासुपूज्यस्वामिने नमः । "

आचार्यश्रीविजयकमलसूरिपादपद्मेभ्यो नमः । "

आचार्य श्रीविजयलब्धिसूरि कृत-

श्रीवासुपूज्यजिन-पञ्चकल्याणक-पूजा ।

॥ दुहा ॥

जयानंदन[1] जिनपति, स्थापी हृदय मोझार ।
नमी स्तवुं श्रुतदेवता, आपे ज्ञान उदार ॥ १ ॥
तपगच्छगयणे[2] दिनमणि[3], विजयानंदसूरिराज ।
तस पट्टधर गुरुवर नमूं, विजयकमल सूरि ताज[4] ॥२॥
पांच कल्याणक पूजवा, स्तवीशुं श्रीजिनराज ।
चारगति ने टाळवा, लेवा शिवपुर राज ॥ ३ ॥
द्वादश गुण अर्हन् तणा, मेळववा अभिलाष ।
धरी स्तवुं जिन बारमा, एहथी पुण्य विकाश ॥ ४ ॥
च्यवन जनम दीक्षा तथा, केवल ने निर्वाण ।
पांच कल्याणक पूजतां, पंचम गति गुण ठाण ॥५॥

---

१ वासुपूज्य. २ गगन. ३ सूर्य. ४ मुगट.

एम धारी मन सेवता, शक्र आदि सुरेश ।
पांच कल्याणक जिन तणां, करे अठाई विशेष ॥६॥
द्वीपनाम पुष्कर वर, मंगलावती मोझार ।
रत्नसंचयामां थया, पद्मोत्तर नृप सार ॥ ७ ॥
वज्रनाभ गुरुवर थकी, पाली संयम सार ।
स्थानक वीश आराधीने, गया प्राणत मोझार ॥८॥
इम तीर्थंकर गोत्रने, कर्युं भव त्रीजे सिद्ध ।
कारण एहिज जाणिये, थया जगत प्रसिद्ध ॥ ९ ॥

॥ प्रथम–च्यवन कल्याणक–पूजा ॥

॥ दुहा ॥

प्रथम कल्याणक हुं स्तवुं, च्यवन नाम गुणवंत ।
च्यवन थवा भववन थकी, बनवा शिववधूकंत ॥१॥

॥ ढाल–पहेली ॥

(चाल–घन घटा भूघनरंग छाया, नवखंडा....)

श्रीवासुपूज्य जिनराया, भवि सेवो सदा सुखदाया,
॥ अंचली ॥

१ रंचया अने रत्नपुर आ नामो पण अन्य पुस्तकोमां छे. २ स्वामी–

प्रभु देश विदेश गवाया, जस गुण का अंत न आया, भारत शासन प्रगटाया, खूब अचरिज महिमा पाया। इक्ष्वाकुवंश दीपाया (२) ॥ श्रीवासुपूज्य० ॥ १ ॥
ऋद्धि सिद्धि सुखदाया, दक्षिण भरते पंकाया, पुरी चंपा आनंददाया, वसे वसुपूज्य तिहां राया, जस जया नाम है जाया (२) ॥ श्रीवासुपूज्य० ॥ २ ॥
प्रभुप्राणतसे चवीआया, जेठ सुदि नवमी तिथि गाया, चंडे शतभिषग् ठाया, जया कुखसेरहंस कहाया; माय चउदश सुपन दिखाया (२)। श्रीवासुपूज्य० ॥ ३ ॥
माताका मन हरखाया, रोमांचित थइ तस काया, शुभ स्वप्न अरथ मन भाया, तस अनुक्रम दिलमें रचायां, आइ पासे पति जहां ठाया (२) ॥ श्रीवासुपूज्य० ॥ ४ ॥ अंजली युत सिर नमाया, अति मधुर वयणथी वधाया, पति आतम कमल विकसाया, कभी दिलसे न भूलने पाया, ए वाणी लब्धि गुण गाया ॥ (२) श्रीवासुपूज्य० ॥ ५ ॥

---

१ जया मातानी कुखरूप सरोवरमां.

॥ दोहा ॥

निज पति आणा मेळवी, भद्रासन पर ठाय ।
चौद सुपन वर्णन करे, मनमां आणंद लाय ॥१॥
पोढी हती सुखसेजमां, निद्रा अल्प लहंत ।
करी वृषभ हरि शोभतो, लक्ष्मी शोभावंत ॥ २ ॥
माल सुगंध विस्तारती, चंद्र सूर्य सुखकार ।
ध्वजा कलश शुभ पद्मसर, क्षीरसागर मनोहार ॥३॥
विमान रत्नराशि ने, निर्धूमअग्नि आज ।
स्वप्न विषे जोयां अमे, तस फल कहो महाराज ॥४॥

॥ ढाल—बीजी ॥

(राग—कल्याण—नमीये नमावी सिर प्रथम जिणंदा)
देखे हैं सुपन देवी ! तुमे सुखकंदा,
तुमे सुखकंदा देवी ! अतीव आनंदा ॥ अंचली ॥
धन धान्य सुखकारी, राज्य रंग दातारी ।
मणि हेम ऋद्धिकारी, गुण है अमंदा ॥ देखे हैं० ॥१॥

---

१ हाथी. २ सिंह.

मंगल नव नवे होवे, सुपन ए चउद जोवे।
अति जो विशद होवे, हरे भवफंद। ॥ देखेहैं०॥२॥
पुत्र भोग लाभ होशे, रिपु नहीं सामूं जोशे।
जय जीव घोषकारी, होशे देव वृंदा॥देखेहैं०॥३॥
नवमासाधिक गये, पुत्रकी प्रसूति भये।
हम कुल ख्यात होशे, जग भव चंदा॥देखेहैं०॥४॥
आतम कमल मुज, सुणी ए वचन तुज।
विकसित भावकारी, लब्धि लहंदा॥ देखेहैं० ॥५॥

श्लोकः–

प्रस्तुतः देवदेवेन्द्रै–र्गर्भगोऽपि भुवस्तले।
वासुपूज्यजिनो नित्यं, दद्यात् स सुखसंपदाम् ॥१॥

मंत्रः–

ओँ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वासुपूज्यजिनेंद्राय अक्षतादिकं यजामहे स्वाहा।

—*—

॥ द्वितीय-जन्मकल्याणक-पूजा ॥

॥ दुहा ॥

कौटुंबिक जन मोकली, पाठक लिया बोलाय।
चौद सुपननी वार्ता, नृपथी सुणी हरखाय॥१॥
जिनवर माता देखती, चौद सुपन सुखकार।
झांखा चक्रीप्रसू प्रभो! एहीज चौद प्रकार॥२॥
वासुदेव जननी जुवे, स्वप्न सात सुखदात।
चउ वलदेव प्रसू तथा, एक मांडलीक मात॥३॥

॥ ढाल--पहेली ॥

राग-केरबो, मैने इत्तेमें हिरलो गुमाय दियो रे ए-चाल)
इन स्वप्नोंने कल्पतरु बोय दियो रे,
बोय दियो रे नृप! बोय दियो रे॥ इन०॥

साखी—

कामकुंभ चिन्तामणि, कामधेनु सुखकार।
विन याचे गृह आंगणे, आठ्या तुम निरधार॥इन०॥१॥

साखी—

तुम कुल केतु कुलमणि, पादप[2] सम सुखकार।

---

१ माता २ वृक्ष

वर्धक यश सुखकीर्तिको, होशे पुत्र उदार ॥इन०॥२॥

साखी-

बहोतेर स्वप्न हम शास्त्रमें, त्रीश है स्वप्न विशेष ।
उनमें भी ये चौद है, धरते गुण अशेष ॥इन० ॥३॥

साखी-

भाग्यभर जस उदयमें, उस घर एसा पुत ।
जैसा तुम घर स्वप्नसे, होशे सुंदर सुत ॥इन० ॥४॥

साखी-

आतम कमल विकसित करे, राजन स्वप्न हमेश ।
दुःखदोहग जरूसे टळे, जिसघर लब्धि जिनेश ॥इन०५

———०———

वसुपूज्य ए सांभळी, हर्षित मनथी राय ।
दान मान सन्मानथी, पाठक कर्या विदाय ॥ १ ॥
जयादेवी पासे जइ, कह्युं स्वप्न वृत्तांत ।
पुलकित तन विकसित वदन, थयो हर्ष नितांत ॥२॥

गर्भरक्षण कारणे, पथ्य मित लहे आहार ।
गर्भबाधक स्थानने, छोडी करे विहार ॥ ३ ॥
दोहद शुभ जे उपजे, पुरे नृप [1]अशेष ।
गर्भशीख निज सखी तणी, पाले राणी विशेष ॥४॥
काल सुखकर ते हतो, वायु वाय प्रसन्न ।
शतभिषगमां चंद्रमा, धरणी पर बहु अन्न ॥ ५ ॥
फागण वद चउदश दिने, समय उच्चग्रह युत ।
महिष चिह्ने शोभतो, राणी जायो सुत ॥ ६ ॥
व्याप्युं भुवन उद्योतथी, भूमि पण लहे श्वास ।
नारक पण सुखीया थया, दुःखनो थयो [2]व्युंदास ॥७॥

॥ ढाल—बीजी ॥

(राग—जिनराज झुले—ताल हींच.)

वारी वारी जाउं के खुशी खुशी थावुं, जिन-
राज जन्म पें वारी जाउं ॥ वारी० ॥ अंचली ॥
भोगंकरादि देवी आवे, अधोलोकथी आठ । जिनवर

---

१ संपूर्ण. २ तिरस्कार-नाश.

जिनजननीको नमकर, करती नाना ठाठ ॥वारी०
॥ १ ॥ देवी धन्य तमे छो जगमां, सूनु[1] जैनगुरु
जायो। एम कही भू शुद्ध करीने, गीत गान त्यां
गायो ॥ वारी० ॥ २ ॥ ऊर्ध्वलोकथी आठ देवीओ,
आवी जिन दरबार। गंधोदक पुष्पोंकी वृष्टि,
करती नाना धार ॥ वारी० ॥ ३ ॥ पूर्वरुचकवर-
वासी देवीयो, लइ दर्पण सोहावे। दक्षिण दिग्-
वर्ती आठो त्यां, कलश हाथमें गावे ॥वारी०॥४॥
पश्चिमकी पंखा लइ उभी, उत्तर चमर चलावे।
विदिशाकी चार कुमारी, दीपक करती जावे ॥
वारी० ॥ ५ ॥ मध्य रुचकनी चार देवीओ, रक्षा-
कार कहावे। धाम स्नान आदि सब करणी, करी
लब्धि विकसावे ॥ वारी० ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

हरि आसन कंपित थयुं, अवधि ज्ञानथी जाण।
जन्म थयो जिनराजनो, वंदे धरी बहुमान ॥ १ ॥

---

१ पुत्र.

सुघोषा हरिथी हरि, आज्ञा लई बजाय ।
खबर करे देवलोकमां, जिन जन्मे हरि जाय ॥ २ ॥
पालक नाम विमानते, पालक नामे देव ।
रची कहे निज नाथने, अवधारो अम सेव ॥ ३ ॥
हळीमळी हरि देवता, चंपापुरीमां आय ।
समपत श्री जिनवर नमी, दे अवस्वापिनो माय ॥४॥
प्रतिबिंब जिन सारिखुं, धरी जनेता पास ।
पांचरूप इंडे धर्यां, सर्व श्रेय धरी आश ॥ ५ ॥
एक रूपथी जिन ग्रहे, बीजे छत्र धराय ।
त्रीजुं वज्रधर शोभतुं, चामर धर बेठाय ॥ ६ ॥

॥ ढाल–त्रीजी ॥

(राग—सरफरोशीकी तमन्ना)

सुरगिरि[2] पर शक्र आया, गोदमें जिनवर लिया ।
अतिपांडुकंबलापें, शक्रने आसन किया ॥ सुरगिरि०
॥ १ ॥ आठ जाति कलश करके, तीर्थ जलसे भर-

---

१ हरिणिगमैषी. २ मेरु पर्वत.

लिया। अच्युतेंद्रे भक्ति भावे, अभिषेक वहां कि-
या ॥ सुरगिरि० ॥ २ ॥ क्रमानुक्रम एम करतां,
शक्र वारा आगया। चार रूप धारी शक्र, भावथी
वृषभ भया ॥ सुरगिरि० ॥ ३ ॥ गोदमें ईशाने
जिनको, बहुत प्रीतिसे लिया। अष्टशृंगसे क्षीरधारा,
शक्रने वर्षादिया ॥ सुरगिरि० ॥ ४ ॥ गीत गान
और तान साथे, नाट्य वहां नाना किया।
आतम कमले लब्धि लाहा, लेना था सो ले लिया
॥ सुरगिरि० ॥ ५ ॥

—— :+: ——

॥ दोहो ॥

आरात्रिक उतारीने, वासुपूज्य जिन पास ।
स्तुति करे अति भावथी, दिलमां धरी शिव आश ॥१॥

——

॥ ढाल–चोथी ॥

(राग–महावीर तुमारी मोहन मूर्ति देखी मन ललचाय)

वासुपूज्य जिनेश्वर जोइ मारुं दिलकुं हरखाय,

॥अंचली॥ प्रभु सर्व देव गरिठो, मैं जगमें और न दिट्ठो। लागे मुज मन अति मिठो रे, मन तृप्ति नव थाय ॥ वासु० ॥१॥ प्रभु एक अनेको जगमें, तुज भक्ति मुज रग रगमें। नहीं माणेक होय नेग नगमें रे, तिम दुर्लभ जिनराय ॥ वासु० ॥ २ ॥ प्रभु निगोदमें नहीं मिलियो, त्यां काल अनंतो रुलियो। थावर बि ति चउ भूलियो रे, विन दर्शन दुःख पाय ॥ वासु० ॥ ३ ॥ अब पुण्य उदय मैं पायो, सन्नी पंचेन्द्रीमें आयो, तव दर्शन नाथ! दिखायो रे, लेउं आणा शिर चढाय ॥ वासु० ॥ ४ ॥ प्रभु स्थिर वोधी हुं मागुं, निज आतम भावमां जागुं। मेरी तेरीसे भागुं रे, ए आपो महाराय !॥ वासु० ॥ ५ ॥ मुज तत्त्वत्रयी प्रभु आपो, तुम हस्त शिर पर स्थापो। भव भ्रमणा मारी कापो रे, पामरपें दिल लगाय ॥ वासु० ॥ ६ ॥ मुज आतम कमल विक-

---

१ पर्वत-पहाड पहाडमें.

सावो, लब्धि लक्ष्मी निवसावो। हुं राखुं तुमथी दावो रे, तुम चरणे चित्त लाय ॥ वासु० ॥ ७ ॥ जिन मूकी जननी पासे, गया नंदीश्वर आवासे। सुर गया पछी सुर वासे रे, निज मनमें जिन-ध्याय ॥ ८ ॥

—:×:—

श्लोकः—

सम्मील्य वासवैः सर्वै—रमर्त्यपर्वते कृतः।
यस्य स्नात्रोत्सवो द्यात्, वासुपूज्यः स सम्पदाम्॥१॥

—

मंत्रः—

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-मृत्युनिवारणाय श्रीमते वासुपूज्यजिनेंद्राय ज-लादिकं यजामहे स्वाहा।

—:*:—

तृतीय-दीक्षा कल्याणक-पूजा.

॥ दोहा ॥

पुत्र जोइ प्रातः समे, दासी वर्ग हरखाय।
एक एकथी चालमां, वधती नृप कने जाय ॥१॥
वधाइ सुत जन्मनी, नरपति कर्णे दीध।
माने नृप मुज कर्णमां, मणिमय कुंडल कीध ॥२॥
स्वर्णालंकृति आपीने, तोषंतो परिवार।
दान मानथी आवतो, प्रसूति घरमां पधार ॥३॥
रत्नदीपद्युति[1] सम तनु, जोई पुत्रवर मुख।
करे प्रशंसा राणीनी, पामी नरपुर सुख ॥४॥
पुत्र जन्म महोच्छव कर्यो, दश दिन सुधी महान्।
स्थितिपतिका नामथी, ए जिन जन्म प्रधान ॥५॥
माफ करे कर लोकनो, महसूल माफ कराय।
वाजिंत्रो वगडावीयां, घर घर मंगळ थाय ॥६॥
वर्धापन आवे घणां, दिन बार वही जाय।
जमण आप्युं प्रीतथी, भोजन सरस बनाय ॥७॥

---

१ कांति.

स्थाप्युं वासुपूज्यजी, नाम जिणंद सुखकंद ।
पडतां नावियण कानमां, आपे अति आणंद ॥८॥
अंगुष्ठामृत पानथी, इंद्रे स्थाप्युं जेह ।
शरीर वधे जिनराजनुं, लावण्य गण गेह ॥९॥

॥ ढाल–पहेली ॥

(राग–कालिंगडो, खतरा दूरकरणा करणा–ए चाल)

दर्शन जिनवर का करणा,
बाकी सब पाखंड परिहरणा ॥ दर्शन० ॥१॥
रूप अनुपम जिनवर केरा,
दंत उज्ज्वल वर्णा ॥ दर्शन० ॥ २ ॥
शीत केश भाल अर्ध शशी सम,
कोमल कर चरणा ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥
ओष्ठ बिंब फल जैसा नीका,
शंख ग्रीवा धरणा ॥ दर्शन० ॥ ४ ॥
कमल पांखडी आंखडी सुंदर,

अंग ज्योति झरणा ॥ दर्शन० ॥ ५ ॥
धनुष सीत्तेर मान देहका,
पाप पकल हरणा ॥ दर्शन० ॥ ६ ॥
आत्म कमलमें जिनवर ध्याई,
शिव लब्धि वरणा ॥ दर्शन० ॥ ७ ॥

॥ दोहा ॥

यौवन वय करी शोभता, वासुपूज्य जिनेश।
मात तात मली विनवे, करी आग्रह विशेष ॥१॥
अनेक देशथी आवता, कन्या देवा काज।
लग्न स्वीकारो सुत भला, आपो आनंद आज ॥२॥
आदीश्वर आदि प्रभु, करी लग्न अरु राज्य।
पुत्रादि पेदा करी, लीधुं शिवपुर राज्य ॥३॥
वासुपूज्य कहे सांभलो, मात तात सुखकार।
भोगावली कर्मे करी, तेओ परण्या नार ॥४॥
भोग कर्म मारे नथी, तेथी करुं निषेध।
मत लेवा मम भाव छे, मत करो प्रतिषेध। ॥५॥

आ संसार असारमां, वृषभ परे भटकंत।
काल अनंतो गुमावीयो, तोय न आव्यो अंत

॥ ढाल-बीजी ॥

(राग-भीमपलासीनी कवाली)

(जमना तणा किनारे गोपाळ गो चरावे-ए चाल

संसारमां पिताजी, नहीं सार कांई जो

॥ अंचली ॥ सर्वत्र ग्राम देशे, भटक्यो ज
निवेशे। अटवी नदी गिरि पर, रखडी में काल ख
॥ संसार० ॥१॥ प्रदेश पण न खाली, दुनिया न
भाली। मृत्यु जनम विनानी, एम दुःख ब
ढोयो ॥ संसार० ॥ २ ॥ संसार तरु वधारे, वि
दोहदा रे। भोगावली भावे, ए कार्य में वि
॥ संसार० ॥ ३ ॥ नहीं लग्न पण ए होळी, ज
अनंतरोळी। जड भावना विभावो, एमां न

---

१ इच्छाओ २ छोडी बीधुं. ३ नाश करनार.

मोह्यो ॥संसार०॥४॥ वासुपूज्य एह वाणी, वसुपूज्य दिल ठराणी। आतम कमलकी लब्धि, वारक मल धोयो ॥ संसार० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

मात तात प्रबोधीने, दीक्षा लेवा काज।
अढार लाख वर्षो गये, थया सज्ज जिनराज ॥१॥
लोकांतिक तिहां आवीया, करी प्रदक्षिणा सार।
जय जय क्षत्रिय वर वृषभ, जय जय जिनकुमार॥२॥
प्रभो ! तीर्थ स्थापन करी, तारो दीन अनाथ।
जिन बिन डुबत नाव को, कौन ग्रहे धरी हाथ॥३॥

॥ ढाल--त्रीजी ॥

(राग-बोलो मारा प्रेमी पोपटजो बोल बोलो...)

तारो मारा व्हाला तीर्थंकर तारो, तारो तारो तीर्थ वधारो। तीर्थ निज स्थापी दुःख सवि कापी, कापी कापी आतम सुधारो ॥ अंचली ॥ तारे जग तारे तीरथ तुम तारे, नरक तिरि वारे

श्रद्धारूप धारे। सेवाथी होय भवपारो, पारो पारो आतम सुधारो ॥ १ ॥ रागद्वेष जित्या ए भावने प्रमाणी, आगमथी जाणी ए भाव दिल आणी। करी विनति ते नाथ! अवधारो, धारो धारो आतम सुधारो ॥ २ ॥ दुःखदाह दाझ्युं जग मोहमां ऽ झायुं, अगाध दुःख जलमां ते कर्मथी फुंकायुं। तीर्थ दान देइ ए दुःख सब वारो, वारो वारो आतम सुधारो ॥३॥ आतम कमल विकाशक जाणी, शासन तमारुं जे मानशे प्रमाणी। करशे निज लब्धिनो वधारो, धारो धारो आतम सुधारो ॥ ४ ॥

॥ दोहो ॥

दीक्षा भवदुःखवारणी, दीक्षा भवजल झहाज।
लेवाने उद्यत थया, वासुपूज्य जिनराज ॥ १ ॥

॥ ढाल-चोथी ॥

(राग-जो दिन जावे प्रभुके ध्यानमें)

दीक्षा कल्याणक जिनराजका, मन इंद्र

विभारी। सारमें सार यही संसारमें, आधारमें, उद्धारमें, सुख साधन धारी ॥ दीक्षा० ॥ अंचली ॥ चौसठ इंद्र आवे, जाति अरु कलश बनावे। तीर्थ जलसे नवरावे, सारमें सार यही संसारमें, आधारमें, उद्धारमें ॥ सुख० ॥ दीक्षा० ॥ १ ॥ शिबिका पृथिवी नामा, अद्भुत सिंहासन धामा। रचे देव वांछित कामा, सारमें सार यही संसारमें आधारमें उद्धारमें ॥ सुख० ॥ दीक्षा० ॥ २ ॥ प्रभु शिबिकामें बिराजे, अमर आदि सुरराजे। उपासी सेवा काजे, सारमें सार यही संसारमें, आधारमें, उद्धारमें ॥ सुख० ॥ दीक्षा० ॥ ३ ॥ देव सुम[१] वृष्टि करते, जय जयकार उच्चरते। वादित्र नाद उछलते, देव नर सब भले मंगल आचारमें, सुखकारमें भवपारमें ॥ सुख० ॥ दीक्षा० ॥ ४ ॥ पत्ति[२] गय[३] हय[४] रह[५] भारी, शोभा है खूब वधारी, आ-

---

१ पुष्प. २ पायदळ. ३ हाथी. ४ अश्व. ५ रथ.

शिष दे वृद्धानारी, सारमें सार यही संसारमें
आधारमें उद्धारमें ॥ सुख० ॥ दीक्षा० ॥ ५ ॥
फागुण मास अमासे, वारुणमें चंद्र प्रकाशे । वि-
हारगृह वन वासे, भूषण उतारे जिनराजजी,
शिवकाजजी, महाराजजी ॥ सुख० ॥ दीक्षा० ॥६ ॥
चतुर्थ वर तप करीया, मुष्टि पंच केशो धरीया ।
छसो नृपवर परिवरीया, करेमि भंते[2] उच्चरे, लब्धि-
कारमें, आधारमें, उद्धारमें ॥ सुख० ॥ दीक्षा० ॥ ७ ॥

श्लोकः–

दीक्षा कल्याणके यस्य, सम्मीलिताः पुरंदराः ।
आत्मकल्याणकं चक्रुः, सेव्रया स शिवाय मे ॥ १ ॥

मंत्रः–

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परेश्वराय जन्मजरा-
मृत्युनिवारणाय श्रीमते वासुपूज्यजिनेंद्राय
जलादिकं यजामहे स्वाहा ।

---

१ शतभिषग् नामनुं नक्षत्र. २ भंते पम भगवान् बोलता नथी.

चतुर्थ-केवल कल्याणक-पूजा ।

॥ दोहा ॥

मनःपर्यव पेदा थयुं, दीक्षा लेतां सार ।
महापुर नगरे वसे, सुनंद नृप सुखकार ॥ १ ॥
बीजे दिवसे नाथने, परम[१] अन्न लाजंत ।
हर्ष धरी देवो मळी, पंच दिव्य विकरंत ॥ २ ॥
रत्नपीठ तिहां रचे, सुनंद नृप मनोहार ।
जिन पारण स्मृति कारणे, पामर लंघनवार[२] ॥३॥
वायुवत् जिनराजजी, त्यांथी करी विहार ।
विचरे अप्रतिबद्ध ते, ग्रामाकर पुर सार ॥ ४ ॥
प्रतिविष्णु तारक तणी, जरुथी जरु उखाय ।
वासुदेव द्विपृष्ट त्यां, थया प्रखर महाराय ॥५॥

---

१ परम अन्न-क्षीर. २ पामर उल्लंघन न करे ते माटे.

॥ ढाल—पहेली ॥

(राग-कानुडा तारी कामण क नारी)

जिणंदा तारी आनंद करनारी, वृत्ति पर जाऊं सहस वारी। निरागी जगमें तुज मूर्ति प्यारी, अतुल शुभ्र चारित्र धारी ॥ अंचली ॥ अनुभव रसकी खूब खुमारी, उपशम रस क्यारी। मैं चाहुं, मैं चाहुं अहोनिश जिन ! सेवा थारी, तुज बिन गति नहीं मारी ॥ जिणंदा० ॥ १ ॥ समिति गुप्ति वर शस्त्र धरीने, माया मोह मारी, प्रभु शोभे, प्रभु शोभे अनुपम ब्रह्म गुप्ति धारी, आतम गुण भ्रमण रमणकारी ॥ जिणंदा० ॥ २ ॥ अनुपम आर्जव अनुपम मार्दव, क्षमा अलोभ धारी। नहीं जगमें, नहीं जगमें जिन सम शुभ्र वृत्तिकारी, कल्पवासी चंदनधारी ॥ जिणंदा० ॥ ३ ॥ आतम कमल विकसित करवाने, ममता सब वारी। नित्य

पाले, नित्य पाले संयम लब्धि खड्गधारी, जाऊं जिनवर पें बलिहारी ॥ जिणंदा० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

वर्ष कल्प पछी आवीया, विचरंता जिनराज ।
विहारगृह दीक्षा वने, सजी अंतरनो साज ॥ १ ॥
ध्यान बीजुं प्रभु शुक्ल त्यां, रह्या निज मनमां ध्याय ।
माघ सुदि द्वितीया दिने, तरु पाटल अध ठाय ॥ २ ॥
तप चतुर्थ बाह्यथी, करे तदा गुणवंत ।
अभ्यंतर तपनी तसु, गणना कोण करंत ॥ ३ ॥
घाती कर्मनो नाश कर, पाम्या केवलज्ञान ।
देव सवि तिहां आविया, महोच्छव करे महान् ॥ ४ ॥

---:*:---

॥ ढाल–बीजी ॥

(राग–में दुनिया सघळी जोई, कोईनुं मव दीठुं कोई.)

में दिव्य नयनथी जोई, दुनिया नहीं कोईनी

होई। स्वारथनी जाळमां रोई, निज गुण सघला दिया खोई ॥ अंचली ॥ अहीं होय माता ते तो बीजे भवे नारी, पिता होय पुत्र और पुत्र होय वेरी। करमनी माया एम जाणे न मूरख सोई ॥ मैं० ॥ १ ॥ आज होय राजा ते तो काले थाय रैया[1], अजब सरिखी एतो जगतकी माया। अ-थिर जगतमांही स्थिर नहीं दीठुं कोई ॥ मैं० ॥ २ ॥ मनुष्य जनम पाई करे न कमाइ, नरभव रतनसी उमर जो खोई। क्षणनाशी जगतमें गाफिल है नर सोई ॥ मैं० ॥ ३ ॥ तप जप करी श्रुत चारित्र आराधी, आतम कमल विषे लब्धि पद साधी। ज्ञानीना चरण जइ दुनिया द्यो विछोही ॥ मैं० ॥ ४ ॥

॥ दोहो ॥

भाग्यवान् जन जगतमें, सुने जिन उपदेश।
भाव सहित पालन करी, तोडे कर्म अशेष ॥ १ ॥

---

१ प्रजा.

॥ ढाल-त्रीजी ॥

(राग-सा ठ, कुबजाने जादु डारा-ए चाल.)

भवि ! नरभव दुर्लभ पाइ, तजी दुनिया ल्यो मुक्ति मिलाइ ॥ भवि० ॥ अंचली ॥ महाशोक दुख जरमर भरियो, लोक अति दुःखदाइ । श्रुत चारित्र धर्म आराधी, लो शिव सुखमां वधाइ ॥ भवि० ॥ १ ॥ छोड़ कुकर्म सुकर्मसे लगके झगमग ज्योत जगाइ, काल अनंतसे दुःखी कुकर्मे, अब इनको द्यो भगाइ ॥ भवि० ॥ २ ॥ अनंत ज्ञान अरु सुखके विलासी, जीव अनंत सुहाइ । एसा सिद्धि पद वर त्यागी, मूरख जगमें रुलाइ ॥ भवि० ॥ ३ ॥ विषसम विषया सुखमें पड़के, शिवसुख दिया भुलाइ, शूकर परे ते मूरख प्राणी, पड़ दुर्गंध में धाइ ॥ भवि० ॥ ४ ॥ साधु श्राद्ध दो भेद धर्मथी, आतम लब्धि सुहाइ । कमल परे निजगुण विकासी, धर्मी मुक्तिपद गाइ भवि० ॥ ५ ॥

॥ दोहा ॥

सुबोध लइ जिनवर थकी, सूक्ष्म आदि सुखकंद।
नरवर मलीने विनवे, आपो व्रत जिनचंद ॥ १ ॥
पड़तां अम भव कूपमां, तारो आपी हाथ।
भटकतां भववन विषे, तुंहीज साचो साथ ॥२॥
जिनवर दीक्षा आपता, भाव दया मन लाय।
सूक्ष्म धरणी आदि त्यां, साधु साधवी थाय ॥३॥
स्थापे श्रावक श्राविका, सुयश जयादि सार।
एम संघ स्थापन कर्यो, चतुर्विध प्रकार ॥ ४ ॥
सूक्ष्म आदि गणधर तदा, तत्त्व शुं एम पुछंत।
तिवार उत्तर तेहना, आपे श्री भगवंत ॥ ५ ॥
पामी त्रिपदी लब्धिथी, रचे अंग द्वादश।
पुण्यबळे प्रसिद्धिथी, वध्यो जगतमां यश ॥ ६ ॥

॥ ढाल–चोथी ॥

(राग–बढंस–मूर्ति पार्श्वजिनंदका सो ना–ए चाल.)

गणधरपद हवे नाथजी आपे, नाद वादित्रनो

दश दिशी व्यापे ॥ अंचली० ॥ त्रण प्रदक्षिणा आपी भव्या, निज अवनत तिहां गात्र करी रे। इंद्र वास वज्रस्थालमें लावे, थया भव्या जिन वास धरी रे ॥ गणधर० ॥ १ ॥ श्रीजिनवास मस्तक पर नांखे, संघ चतुर्विध साथे रे। गणानुज्ञा अनुयोग अनुज्ञा, आपी हर्षे नाथे रे ॥ गणधर० ॥२ ॥ बार इम गणधर पद पाम्या, पूरव पुण्य प्रभावेरे, शासन वर उद्योत करीने, शासन स्तंभ कहावे रे ॥ ॥ गणधर० ॥ ३ ॥ नाथ विश्रांति लेवा काजे, देव छंदामां पधारे रे, प्रथम गणधर देशना आपी, भव्य जीवन ने सुधारे रे ॥ गणधर० ॥ ४ ॥

श्लोकः-

यस्य केवलकल्याणं, सर्वकल्याणकारणं
देवेन्द्रैः सेवितं सोऽस्तु, केवलाय सुखाय वः

पंचम-मोक्ष कल्याणक-पूजा ।

॥ दोहा ॥

गणधर पछी प्रकाशता, द्वादशांगीनुं ज्ञान ।
सभा सुणी हर्षित थइ, धन्य गणधर निर्माण ॥
वासुपूज्य प्रभु करे, त्यांथी शुभ विहार ।
नाना देश विषे फरी, तार्या लोक अपार ॥ २
पुण्य पवित्र प्रभु तणां, ज्यां ज्यां कदम ठराय ।
त्यां त्यां सुख सवि संपजे, लहेर बहु वरताय ॥

॥ ढाल-पहेली ॥

(राग-नाथ कैसे गजको फंद छोडायो)

नाथजी के विहार की बलिहारी, जा
वार हजार हुं वारी ॥ अंचली ॥ नाथ निरंज
ज्यां ज्यां जावे, रोग शोक दिये टारी । इति उ
द्रव वैर ऊहेर सब, डूब जाय स्वामी में खारी
नाथ० ॥ १ ॥ फल फूलसे वृक्ष सोहावे, सु

होय अपरंपारी । लाखो जन उद्धार करीने, अम कर्युं विस्मयकारी ॥ नाथ० ॥ २ ॥ नव नवविध दृष्टांत दृखावो, मुबत दुनिया तारी । तुज सरीखो जो नाथ न होतो, शी गति थात हमारी ॥ नाथ० ॥ ३ ॥ दुःख दावानळ सळगे ज्यारे, छांटी बुझावे वारी । आत्म कमलमां लब्धि विकाशे, तीर्थंकर अवतारी ॥ नाथ० ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

अवनितल पावन करी, आपी देशना सार ।
करी विहार प्रभु करे, जग पर बहु उपकार ॥ १ ॥
लाख बहोतेर साधुने, आपी दीक्षा सार ।
एक लाख थई साधवी, अपूर्व गुण धार ॥ २ ॥
पूर्वधर थया बारसो, अवधि पंच हजार ।
चार शत उपर शत, मनपर्यव ठ हजार ॥ ३ ॥

---

१ पाणी.

शत षष्टि थया केवली, वैक्रिय दश हजार ।
शत सुडतालीस वळी थया, वाद लब्धिना धार ॥ ४ ॥
लाख बे पन्नर सहस, श्रावक व्रतना धार ।
चार लाख छत्रीश सहस, श्राविका सुखकार ॥ ५ ॥
मास रहित चोपन्न लाख, केवलनो पर्याय ।
पूर्ण बहोतेर लाखनुं, जिन आयुष्य कहाय ॥ ६ ॥
कुमार यक्ष अरु यक्षणी, चंडा नाम प्रचंड ।
तस शासन रक्षा करी, करतां सेवा अखंड ॥ ७ ॥
विचरंता प्रभु आविया, चंपापुरी उद्यान ।
छसो साथ अणसण कर्युं, जाणी निज निर्वाण ॥ ८ ॥
हतो उत्तराषाढमें, चंद्र तणो संयोग ।
अषाड सुदि चौदश दिने, करी कर्म वियोग ॥ ९ ॥
एक मास संलेखना, प्रांते सिद्ध भदंत ।
शाश्वत सुखडां भोगवे, भांगे सादि अनंत ॥ १० ॥

॥ ढाल--बीजी ॥

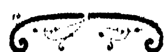
(राग-ओधवजी संदेशो कहेजो मारा श्यामने.)

चंपापुरी उद्याने इंद्रो आविया, आसन कंपथी जाणी जिन निर्वाण जो । दिलगिर थइने करे कल्याणक सेवना, विजातीय ए अंतिम जिन कल्याण जो ॥ चंपा० ॥ १ ॥ देइ प्रदक्षिणा वंदी आक्रंदन करी, कहे संक्रंदन[1] आदि प्रभुनी पास जो । महादुःख दई महानंद प्रभु तुं वर्यो, मूकी अमने रखडता निराश जो ॥ चंपा० ॥ २ ॥ स्वर्गोथी पण पूज्य करी भूलोकने, छोडी चाल्या जिनजी शिवपुर धाम जो । आ भारत दुःखसागरमां गारत थयुं, तुज विण मुखडां सर्व तणां थयां श्याम जो ॥ चंपा० ॥ ३ ॥ अमृतश्रावी वाणी तुम-जननी समा, चाली गइ जग बाल तणा शा हाल जो । धर्मसूर्य केवल ज्ञान गये हवे, कोण रोकशे

---

१ इंद्र.

मोहतम वांकी चाल जो ॥ चंपा० ॥ ४ ॥ गोशीर चंदन काष्ट इंद्र मंगावता, नंदनवनथी आभियोगिक पास जो । पूर्व दिशाए नाथनी वृत्त चिता रची, त्रिखुणी इक्ष्वाकु दक्षिण दिशिए खास जो ॥ चंपा० ॥ ५ ॥ पश्चिम दिशिए चार कोणी चिता रची, इंद्रे ते तो अन्य मुनिने काज जो । क्षीरांबुथी जिन तनुने न्हवरावता, चंदन चर्चे शोकी दिले देवराज जो ॥ चंपा० ॥ ६ ॥ अन्य मुनिनी अन्य देव किरिया करे, देवदूष्यथी ढांक्युं नाथ शरीर जो । सुमन रत्नभूषणथी भूषित कर्युं, शिबिकामां पधरावे मन करी धीर जो ॥ चंपा० ॥ ७ ॥ धूमधाम और गान तान करता थका, त्रण शिबिका लइने चाल्या देव जो । चिता मांहे जिन मुनि तनुने स्थापीने, निज निज करणी लब्धि सारे सेव जो ॥ चंपा० ॥ ८ ॥



॥ दोहा ॥

अग्नि[1] अग्नि प्रजालतो, वायु[2] वायुकार ।
दुग्ध रुधिर मांसो थये, गारे मेघकुमार ॥ १ ॥
दाढो दांत इंद्रो ग्रहे, कोईक अस्थि सार ।
रख्या सख्या ग्रहे जस्म को, विघ्न शांतिकार ॥ २ ॥
स्वर्ण रत्नमय स्तूप कर्यो, देवेंद्रोए सार ।
स्वर्ण प्रतिमा स्थापीने, पूजा करी उदार ॥ ३ ॥



॥ कलश ॥

(शुं कहुं कथनी मारी राज–ए राग)

वासुपूज्य गुण गाया आज–वासुपूज्य गुण गाया, रोमांचित थइ काया आज–वासुपूज्य गुण गाया ॥ अंचली ॥ पुण्य पटह त्रण जुवने वागे, तुज शासनना रागे। महाजाग्ये प्रभु ते मुज मळीयुं, आव्यो तुम्हारी आगे राज ॥ वासु० ॥१॥

---

१ अग्नि कुमार. २ वायु कुमार.

ज्ञान चारित्रमां प्रभु हुं स्फूर्ति, पासे तमारी याचुं
ज्यां सुधी प्रभु ! ते नहीं आपो, त्यां सुधी का
बधुं काचुं राज ॥ वासु० ॥ २ ॥ दिन अना
सेवकनी अरजी, मानो न मानो मरजी । प
मारो आधार न बीजो, एक तमारो छुं गरज
राज ॥ वासु० ॥ ३ ॥ आगम वादे जाणुं जिनज
तार्या प्रभुए अपार । पण जो मारो आत
तारो, तो थाय साक्षातकार राज ॥ वासु० ॥ ४
सोहे 'कमल' सम विकसित मुखडुं, 'लब्धि
तणा दातारी । 'मंगल' कारी भव दुःखहारी, तुं ग
तुं मति मारी राज ॥ वासु० ॥५॥ 'मेरु' सम प्र
धीरता धारी, द्वादशमा अवतारी । बाह्य 'लक्ष
अष्ट सहस्र, अभ्यंतरमां अपारी राज ॥वासु० ॥ ६
त्रण 'भुवन' गाजे ठकुराई, जगजयवन्त 'जयंत
'नवीन' होय ए अनुभव जेने, ते करे भव
अंत राज ॥ वासु० ॥ ७ ॥ फतेरचंद पन्नाजी जाण

मोतीचंद सुरचंद। उभय मळीने महोच्छव मांड्यो, उपधान तप सुखकंद ॥ वासु० ॥ ८ ॥ चंपापुरीनी रचना तेमां, करी अतिमनोहारी। वासुपूज्य मूल-नायक मंरून, शोभे ग्राम बुहारी राज ॥ वासु० ॥ ए ॥ ते कारणथी पूजा रचना, करवा विनति कीधी। ऊवेरचंदभाईए अतिप्रेमे, ते में लक्ष्मां लीधी राज ॥ वासु० ॥ १० ॥ तपगच्छ गगनमें दिनमणि जाणो, विजयानंदसूरि राया। तस पट्टधर श्रीकमलसूरीश्वर, त्रण भुवनमां गवाया राज ॥ वासु० ॥ ११ ॥ तास पट्टधर दानसूरीश्वर, लब्धि-सूरि दो थाय। संवत उगणीश त्यासी साले, लब्धि-सूरि गुण गाय राज ॥ वासु० ॥ १२ ॥ आत्म कमल लब्धि विकाशक, जिन! तुज दरिसण जोतो। बु-हारीमां एम विचारुं, मोह रह्यो हवे रोतो राज ॥ वासु० ॥ १३ ॥

श्लोकः—

मिलित्वा देवदेवेन्द्रैः, कृतो मोक्षमहो महान्।
यस्य स वासुपूज्यो मां, रक्षतु भवपाततः ॥ १ ॥

मंत्रः—

ओँ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते वासुपूज्य-
जिनेंद्राय जलादिकं यजामहे स्वाहा।

इति आचार्य श्रीमद् विजयलब्धिसूरि विरचिता
श्रीवासुपूज्य पञ्च कल्याणक पूजा समाप्ता।



अर्हम् ।

"श्री विजयानंदमद—विजयकमलसूरि-पादपद्मेभ्यो नमः।"

—जैनरत्न व्याख्यानवाचस्पति—

आचार्य श्रीमद् विजयलब्धिसूरि विरचिता

अष्टप्रकारी-पूजा।

॥ अभिनंदनजिन मंगल—ठुमरी ॥

ध्यान धरले हो प्यारे जिनवरवा, अभिनंदन सुखकारा रे। प्रभु गुण का कोउ पार न पावे, इंद्र मुनींद्र पण हारा रे। किस तरह गुण गाऊं मेरे जिनका, न करे काम मन मारा रे॥ ध्यान०॥१॥ गुणी गुण गाने को गुणी मन मोरा, तलस रहा अति भारा रे। बाल सागरका माप करे ज्युं, कलम खुं करमें धारा रे॥ ध्यान०॥२॥ लाख चोरासी योनि जिनवर!, भटक भटक दुःख धारा रे। आनंदसे अब शरण लई प्रभु, दुःखका हुआ विसारा रे

॥ ध्यान० ॥ ३ ॥ मुज मन कमलमें तुझ को धारा, तुं मुज हृदय का हारा रे। निशदिन घटमें मनाउं तोरा मुजरा, शिवपद लब्धि आधारा रे ॥ध्यान०॥४॥

सरस्वती–स्तुति।

शार्दूलविक्रीडित–छंद।

मैं मानुं उपकार मात! तुमरा, तुं है मुजे शारदा!
स्वर्णसार सुकाय स्हाय करती, हरती विघन वार्ता।
प्रत्यक्षानुभवा सदा कवि जने, तुंही है संपत्करी,
मुज जैसे मतिबालको कर धरो, प्रगति करावे खरी १

पीठिका–दुहा।

अलख अगोचर अमर को, अष्ट द्रव्यसे सार।
जो पूजे भवि प्राणीया, भरे पुण्य भंडार ॥ १ ॥
पुण्य ऋद्धि की वृद्धिसे, सो होवे जिनराज।
अतुल सुख संपद लही, अलख अगोचर राज ॥ २ ॥

जल चंदन सुम धूपसे, दीप अक्षत फल सार।
स्थाल नरी नैवेद्यसे, पूज लहो भव पार ॥ ३ ॥

प्रथम-न्हवण-पूजा।

दुहा।

जलाभिषेक जिनवर करी, अपना मेल उतार।
प्रभु शीत व्यवहारसे, निश्चय निज शीत धार ॥ १ ॥

ढाळ।

(सोहणी-गझल)

जिनराज को जीया न्हवण कर, यह कर्म शुचिकार है ॥ अंचली ॥ वरदाम मागध तीर्थ के, वरनीर क्षीरसमुद्र के। सुरसरित सिंधु आदि पानी, अभिषेक उदार है ॥ जिनराज को० ॥ १ ॥ औषधि सब मेल कर, सुगंधसे अति महमहे। ऐसे सुगंधित नीरसे, नर ! करो स्नात्र सार है ॥ जिनराज को० ॥ २ ॥ जिनराज को पूजे वही, निज मेलको धोते सही। इस तरह जिनराज का,

अभिषेक शुद्धिका है ॥ जिनराज को० ॥ ३ ॥ पूजा करी जिनंद की, जलसे लिया सुखसार है । जिम नारी तिम भावे, पूजो बेडा पार है ॥ जिनराज को० ॥ ४ ॥ आतम कमलमें देख लेना, लब्धि का विहार है । पदवी शिवकी शीघ्र मिलती, जिससे आनंदकार है ॥ जिनराज को० ॥ ५ ॥

काव्यम् ।

विमलकेवलदर्शनसंयुतं,
सकलजंतुमहोदयकारणम् ।
स्वगुणशुद्धिकृते स्नपयाम्यहं,
जिनवरं नवरंगमयाम्भसा ॥ १ ॥

मंत्रः ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-
मृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
जलं यजामहे स्वाहा ।

द्वितीय-चंदन-पूजा ।

दुहा ।

करी चंदनसे अर्चना, प्रभु तनु शीत व्यपदेश।
शीत करी निज आतमा, हरो भव ताप अशेष ॥ १ ॥
चंदन साधक शैत्य का, शैत्य साध्य तस जाण ।
जिनपूजा जिमसाधिका, जीव साध्य सुखखाण ॥ २ ॥

ढाळ ।

(राग बहंस,—कीयल टउक रही मधु वनमें.)

चंदन अर्चन श्रीजिन करके,
हरो मिथ्यातप भवि ! निज केरा ॥ अंचली ॥
चंदन केसरसे जिन अर्चन,
करी मन वच्च काय स्थिर घनेरा ।
अर्चन कर निज ताप शमावी,
हरो चोराशी लख भव फेरा ॥ चंदन० ॥ १ ॥
पद जानु कर अंस शिर भाले,
गले हृदय और उदर वरेरा ।

इन नव अंगे जिनवर पूजी,
कर लो जीया तुम शिवपुर फेरा ॥ चंदन० ॥ २ ।
चंदन पूजनसे जयसुर को,
जैसे मिल गया सुख घनेरा ।
त्युं जिन पूजा आतम कमलमें,
शिव संपद वर लब्धि घेरेरा ॥ चंदन० ॥ ३ ॥

काव्यम् ।

जगदुपाधिचयाद्दहितं हितं,
सहजतत्त्वकृतं गुणमंदिरम् ।
विनयदर्शनकेशरचन्दनै,
रमलहृन्मलहृज्जिनमर्चये ॥ १ ॥

मंत्रः ।

ओँ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मजरा-
मृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय
चंदनं यजामहे स्वाहा ।

तृतीय-पुष्प-पूजा ।

दुहा ।

सरस सुगंधित पुष्पसे, पूजी परमातम ।
स्वर्ग धरी शिवपद वरी, कर ले निज आतम ॥१॥
पुष्प सुगंधी महमहे, आगे श्री जिनराज ।
पूजक भाव सुगंधीसे, सारे आतम काज ॥ २ ॥

ढाळ ।

(लावणी)

कुसुम पूजन श्रीजिनवर का,
आत्म कुसुम सुखकारा रे ।
जाइ जुइ केतकी दमणो मरुअ,
मोगरो चंपक प्यारा रे ॥ कुसुम ॥ १ ॥
पाटल पद्म गुलाब चंबेली,
केवडो सुगंधी कारारे ।
बकुल कोरंट अंकोल प्रियंगु,
कुंदादिक प्रकारा रे ॥ कुसुम० ॥ २ ॥
जो भवी भावसे पूजन करते,

सो पावे भवपारा रे ।
वणिक सुता लीलावती जाणो,
जनसे शिव धारा रे ॥ कुसुम० ॥ ३ ॥
आत्म कमल आतम लक्ष्मी,
जो है गुणागारा रे ।
जिनपद सेवन की लब्धिसे,
निजरूप आविर्धारा रे ॥ कुसुम० ॥ ४ ॥

काव्यः ।

सुकरुणासुनृतार्जवमार्दव-
प्रशमशौचशमादिसुमैर्जना ।
परमपूज्यपदास्थितमर्चत,
परमुदारमुदारगुणं जिनम् ॥ १ ॥

मंत्रः ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मज-
रामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
कुसुमानि यजामहे स्वाहा ।

चतुर्थ-धूप-पूजा ।

दुहा ।

जिन आगे करी धूप को, करो पूजन हितकार ।
शुन करमी क मा दही, सुरपद शिवपद धार ॥ १ ॥

ढाळ ।

(राग-हठ छोड सखि ! चल संगमें रे, तोहे
बृजमें क न लावत है.)

कर धूप पूजन अति प्रीत धरी,
तोहे स्वर्गमें इंद्र बुलावत है ।
नहीं प वोगे नवि ! नीच गति,
तुम चित्त जो जिनवर ध्यावत है ॥ कर० ॥ १ ॥
अगर तगर चंदन कस्तूरी,
कुंदरु दशांग मिलावत है ।
तुरुक्क अंबर आदि धूप जाति,
वर धूपधाणामें ठावत है ॥ कर० ॥ २ ॥
पवित्र हो जिनमंदिर जाकर,

आशय शुद्ध जो धारत है ।
वामांगे श्रीजिन के आगे,
धूपकारक दुःख वारत है ॥ कर० ॥ ३ ।
जैसे विनयधर दुःखहर अपनो,
इह परभव सुख धारत है ।
चिदानंद घन चिन्मय मूरति,
पूजनसे लहे पारत है ॥ कर० ॥ ४॥
आत्म कमल जीया जिन अरपणसे,
निज जीव जिनपद धारत है ।
निज घट लब्धि सर्व विकाशी,
शिवपुर गमन स्वीकारत है ॥ कर० ॥ ५

काव्यम्

अशुभपुद्गलसंचयवारणं,
समसुगंधकरतपधूपनम् ।
भगवतासुपरोहितकर्मणां,
जयवतो यवतोऽ[illegible]यसंपदा ॥ १ ॥

मंत्रः ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय धूपं यजामहे स्वाहा ।

पंचम-दीपक-पूजा ।

दुहा ।

दीपक श्री जिनवर पूरे, प्रगट करी भवी जीव ।
जिनवर आगे मागीये, जरू तमहर सुय दीव ॥१।

ढाळ ।

(राग-भले लाल तमाचो मारी)

जीया दीपकसे जिन पूजी,
दीपक भाव मागो रे ॥ अंचल। ॥
धूम कलुषता जिस्में नहीं है,
न परू पतंग आली ।

तेल बत्तिका काम नहीं जहां,
　　होवे कदी न खाली ॥ जीया० ॥ १ ॥
सादि अनंती जोत है जिस्की,
　　समीर वश नहीं आवे ।
चंचलता तलभर नहीं जिस्में,
　　परमयोगी सो पावे ॥ जीया० ॥ २ ॥
धनश्री और जिनमति जाणो,
　　जिन पूजी दीपकसे ।
सुर सुख पहिले अनुभव कर के,
　　प्रेम किया शिवपुरसे ॥ जीया० ॥ ३ ॥
आत्म कमल परमातम ध्याते,
　　आत्म होवे परमातम ।
सर्व लब्धि घट अंतर जागे,
　　कैसा बना है महातम ॥ जीया० ॥ ४ ॥

काव्यं ।

बहुलमोहतिमिरनिवारकं,
स्वपरवस्तुविकाशनमात्मनः;
विमलबोधसुदीपकमादधे,
भुवनपावनपारगताग्रतः ॥ १ ॥

मंत्रः ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मज-
रामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
दीपं यजामहे स्वाहा ।

छठी-अक्षत-पूजा ।

दुहा ।

अखंड अक्षतसे नवी, जो पूजे जिनराय।
कर्म क्षत प्रक्षत करो, अक्षत शिव सुख पाय ॥ १ ॥

ढाळ ।

(उठ उठ अली जाने तारे घेर—ए चाल.)

अक्षत पूजा सार,
अक्षत फल सुखकारी रे ।
शालि गोधूम आदि प्रकार,
करोने भवि! दुःखवारी रे ॥अक्षत०॥१॥
प्रभु आगळ स्वस्तिक सार,
करोने भवि! स्वस्तिकारी रे ।
शक्ति होवे तो मुक्ताफल हार,
धरोने भवि! मुक्तिकारी रे ॥अक्षत०॥२॥
चउगति चूरणकार,
स्वस्तिक शिवसुखकारी रे ।
नंदावर्त करो धरी प्यार,
पुनरागम तुम वारी रे ॥अक्षत० ॥ ३ ॥
कीर युगल जिम पार,
निजात्म कमल तारी रे ।
अक्षत पूजाथी लहो भव पार,
सकल लब्धि भवि! धारी रे॥अक्षत०॥४॥

काव्यः ।

सकलमंगलसंभवकारणं,
परममक्षतभावकृते जिने ।
सुपरिणाममयैरहमक्षतैः,
परमया रमया युतमर्चये ॥ १ ॥

मंत्रः ।

ओँ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
अक्षतं यजामहे स्वाहा ।

सातमी-फल-पूजा ।

दुहा

इस लौकिक फलने मुझे, अति लिया है फसाय ।
फंद फसी जड़ वस्तु के, काल अनंत गुमाय ॥ १ ॥
इस फल को अर्पण करी, धरुं लोकोत्तर आश ।
सो फल मुज को दीजीये, तोडुं जड़ भव पाश ॥२॥

ढाळ ।

(राग-जयजयवंती-तुं है एक प्यारो प्राण-देशा.)

जिनराज फलसे पूजो, देव नहीं जगमें दूजो ।
मिटे सबी कर्म रुजो, तारण तरण है ॥ अंचली ॥
श्रीफल अखोरू बदाम, सीताफल दाडिम नाम ।
मानुं लग रहा आराम, फल फल करण है ॥ जि०॥१॥
पीस्तां फनस नारंग, अमरुत केळां चंग ।
इसविध नानारंग, रखे जिन चरण है ॥जि०॥२॥
वासना फलको टारो, शम संवेग धारो ।
त्याग फल आतम तारो, शिवफल करण है। जि०।३।
कमल ज्युं निर्लेप कारो, फल पूजा दुर्गत नारो ।
करे जिन भाव धारी, शिवको शरण है ॥जि०॥४॥
द्रव्य पूजन प्रभावे, अध्यातम भाव लावे ।
अंतर घट लब्धि जगावे, शिवसुख भरण है॥ जि०।५।

काव्यम् ।

अमल-ाांतिरसैकनिधिं शुचिं,

गुाफलैर्मलदोषहरैरहम् ।

परमशुद्धिफलाय यजे जिनं,

परहितं रहितं परभावतः ॥ १ ॥

मंत्र ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्मज-

रामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय

फलं यजामहे स्वाहा ।

आठमी-नैवद्य-पूजा ।

दुहा

खाते काल अनंत को, खोया न निकला सार ।

यूं जानो जिनवर थकी. अणाहार पद ार ॥ १ ॥

जात जातको वस्तु का, आहार धरो जिन पास ।

करो भक्ति और याच लो, सुखकर शिवपु ्वा न ॥ २ ॥

——:x:——

ढाळ।

(राग–मजाह देते हय क्या यार)

याचो तुम भक्तिसे भगवान्,

निराहारक पद ध्यानेवाले ॥ अंचली ॥

भवि भरी कंचन के थार,

मिठाई बनाई उदार।

निज निराहार करनार,

प्रभु के पास धरानेवाले ॥ याचो० ॥ १ ॥

लापसी सेवो कंसार,

लाडु पेंडा मोतिचुर सार।

खाजा बरफी आदि प्रकार,

विविध पकवान्न धरानेवाले ॥याचो०॥२॥

जड वस्तु धर संस्कार,

बनी कैसी मोहनकार।

जो लहे चेतन संस्कार,

गुण गणनातीत पानेवाले ॥ याचो० ॥ ३ ॥

अणाहारक थोडे जाण,
आहारक है असंख्य प्रमाण ।
अणाहारक गुण है महान्,
जन्म मरणों के हटानेवाले ॥ याचो० ॥ ४ ॥
जिहां आहारक पद का ठाण,
तिहां जन्म मरण है जाण ।
आहारी पामे दुःखखाण,
भक्तिसे मुक्ति जानेवाले ॥ याचो० ॥ ५ ॥
धरी गीत गान और तान,
प्रभु भक्ति करी बहुमान ।
हरिश्चंद्र नृप सुख ठाण,
निजातम कमल खिलानेवाले ॥याचो०॥६॥

———:०:———

काव्यम् ।

सकलचेतनजीवितदायिनी,
विमलभक्तिविशुद्धिसमन्विता ।

जगवतः स्तुतिसारसुखप्रसिका,
श्रम रा महरास्तिविजोः पुरः ॥ १ ॥

मंत्रः ।

ॐ ह्रीँ श्रीँ परमपुरुषाय परमेश्वराय जन्म-
जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेंद्राय
नैवेद्यं यजामहे स्वाहा ।

---:०:---

कलश.

(राग–रेखता.)

आज जिनराज गुण गाया,
मानुं अमृत घट पाया ।
करी अजरा–मर आया,
लहेंगे शीघ्र शिव गाया ॥ आज० ॥ १ ॥
पूजन कर अष्ट द्रव्यांसे.
मिलाइ अष्ट सिद्धि है ।

करम के फंदको तोमी,
धरी निज आत्म ऋद्धि है ॥ आज० ॥ २ ॥
द्रव्य और भावसें पूजो,
ईन्होंसे स्थान नहीं दुजो ।
हीरा पन्ना निलम पुखराज,
चढाकर नाथको पूजो ॥ आज० ॥ ३ ॥
सदाचार भावशुचिकर,
जिनंद पूजी महाव्रतधर ।
वरो शिवसंपदा सुखकर,
अतिनीच अष्टकर्मों हर ॥ आज० ॥ ४ ॥
विजयानंद सूरि राया,
अति गुणवान गुणी गाया ।
अति उपकार जय करके,
अमरपुरीमें है गया ॥ आज० ॥ ५ ॥
उनोंके पट्टके स्वामी,
सूरिकमल है गुणधामी ।

दयालु देश हित कर्ता,

गुरु मेरे हैं निष्कामी ॥ आज० ॥ ६ ॥

राधनपुरमें रही चउमास,

उन्नीसो ऐंसी मागसर मास ।

बनाकर संघको देकर,

प्रतिकारे धरुं शिवआस ॥ आज० ॥ ७ ॥

इति श्री जैनरत्न व्याख्यान वाचस्पति आचार्य श्रीमद् विजय लब्धिसूरिविरचिता अष्टप्रकारी पूजा समाप्ता ।



"स्तवनो।"

—:o:—

"श्रीआदिजिन–स्तवन।"

(राग–कानुडा तारी कामण करनारी)

आदिजिन अद्‌भुत आनंद करनारी, मूरति मनोहरा तारी। आपे वळी झटपट शिवपुर सुखकारी, मूरति मनोहरा तारी॥ अंचली॥ चरणोमें आयो तुम हरवा, मरण दुःख भारी। हुं चाहुं, हुं चाहुं शूरवीर थइने शिवनारी॥ मूरति० ॥ आदि०॥ १॥ काळ अनंतो खोइ पुण्ये, मनुज देह धारी। हुं पायो, हु पायो समकित लइने सुखभारी॥ मूरति०॥ आदि०॥ २॥ आतम आनंद को लेवा, तुम चरण कमल धारी। अब मानुं, अब मानुं मिल गइ लब्धि मुझे सारी॥ मूरति०॥ आदि०॥ ३॥

—:o:—

(२)

ऋषभजिन सुन लियो भगवान, अरज तुमसे गुजारुं हुं॥ अंचली॥ लगाकर कर्मने घेरो, योनि लख वेद वसु फेरो। जन्म मरणोंकी धारामें, हा हा! क्या कष्ट धारुं हुं॥ ऋषभ०

॥ १ ॥ श्वासोश्वास एकमें जिनजी, सत्तर मरणों जनम लिया। गति निगोद विकाशमें, अनंतो काल हारुं हुं ॥ ऋषभ० ॥ २ ॥ नरक दुःख वेदना भारी, निकलनेकी नहीं बारी। शरण वहां है नहीं किसीका, प्रभु ए सच पुकारुं हुं ॥ ऋषभ० ॥ ३ ॥ गति तिर्यंचकी पामी, जहां नहीं दुःखकी खामी। जवी दुःखसें चक्कर आवे, नहीं आंखोसे भालुं हुं ॥ ऋषभ० ॥ ४ ॥ मुझे ऐसा करो उपकृत, होउं मैं जिससे निर्मळहृत्। अट्ठावीस लब्धिको पाई, मोक्ष लक्ष्मी निहाळुं हुं ॥ ऋषभ० ॥ ५ ॥

"श्री अजितजिन–स्तवन।"

(झिंझोटी–दादरो)

सुनो सुनो मेरी इतनी अरज, अजित! कान धरी। भव वन दावानलसे बचा लो, अमृत वृष्टि करी ॥ सुनो० ॥ अं-चली ॥ पीछे है कर्म अरी, उस पापीको दूर करी। करो कृ-तार्थ दासको अपने, मोक्षकी महेर करी ॥ सुनो० ॥ १ ॥ आपकी आश खरी, मोहे औरसे काय परी। समकित सार लही हे जिनवर! नाम जपुं तुमरी ॥ सुनो० ॥ २ ॥ मुज आ-तम कमलरी, स्वामी खूब विकसित करी। सर्व लब्धिका नाथ बना दो, तनिक महेर करी ॥ सुनो० ॥ ३ ॥

" श्रीसंभवनाथ–स्तवन। "

(अजित जिनेश्वर प्रीतडो–ए चाल.)

संभवजिन सुखसागरु, तुम विण नहीं हो में दीठो देव के। राग द्वेष जस लेश ना, जास सेवे हो सुरासुर देव के ॥ संभव० ॥ १ ॥ बीजा निज नारीमां राचिया, वळी माच्या हो परनारी संगाथ के । मांस मदिरा वापरे, नवि जोडुं हो ए कुदेवने हाथ के ॥ संभव० ॥ २ ॥ अहित करे जे जीवनुं, एवां शस्त्रो हो धारे निज हाथ के । करम विवश बन्या बापडा, नवि तारे हो बीजाने अनाथ के ॥ संभव० ॥ ३ ॥ निर्दूषण प्रभु जिन ! तमे, न दीसे हो जेमां लेश विकार के । न स्तवुं हुं प्रभु ! पक्षथी, स्तवुं तमने हो करी शास्त्र विचार के ॥ संभव० ॥ ४ ॥ पहेलां कुल संस्कारथी, हतो अधिको हो जिनचरणमां राग के । हवे जाणुं परशास्त्रथी, पर देवो हो झेरीला छे नागके ॥ संभव० ॥ ५ ॥ भवो भवनो प्रभु ! ऋणीयो, आतम कमले हो कर्यो रुडो प्रकाश के । जिन सूरजथी ए गुण लही, राखे लब्धि हो शिवनगरनी आश के ॥ संभव० ॥ ६ ॥

---

(२)

(भैरवी, आवी मूर्ति मोहनगारी–यह चाल.)

महामूर्ति मंगलकारी, गुणागार संभव ! तारी ॥ अंचली ॥ धामको हारी धामको धारी, अचरिजकारी कीर्ति तारी, ज्ञान ध्यान भंडारो ॥ महामूर्ति० ॥ १ ॥ रागको टारी, द्वेषको वारी, कर्म रिपुदल जडसे विडारो, हो गये शिवपद धारी ॥ महामूर्ति० ॥ २ ॥ कर्म कटारो लगी मोहे भारी, खींच कर मुज निर्भय कर दीजो, निर्भय पद दातारो ॥ महामूर्ति० ॥ ३ ॥ आतम तारी, कमल ज्युं न्यारी, ऐसी मुज बना दो होउं, शिव लब्धि भरतारी ॥ महामूर्ति० ॥ ४ ॥



"श्री अभिनंदनस्वामि–स्तवन।"

(नाम ईलापुत्र जाणीये–ए चाल)

अभिनंदन प्रभु ! विनवुं, वारो करमनो वार । हुं छुं करमोथी पीडियो, लाग्यो हवे तारे लार ॥ अभिनंदन० ॥ १ ॥ तुमे सुख धारी छो साहिबा, मारे नहीं दुःखोनो पार । जो नवि आश्रित उद्धरो, तो क्यां करवो पोकार ? ॥ अभिनंदन० ॥ २ ॥ जो सुख पामी न सुख दीए, थइ दुःखी गरीबनिवाज । तो पछी सुखीया पणुं प्रभु !, कहो आवे ते शा काज ? ॥ अभि-

नंदन० ॥ ३ ॥ प्रभु ! तुम नामना वर्णमां, रह्यो खुश करवानो अर्थ । जो दीन अरज न धारशो, तो ते थाशे निरर्थ ॥ अभि-नंदन० ॥ ४ ॥ श्रवण थकी में सांभळ्युं, तार्या लोक अनेक । ए लालचथी हुं आवियो, धरी तुम चरणानी टेक ॥ अभिनं-दन० ॥ ५ ॥ आश पूरो प्रभु माहरी, हवे नहीं करशो निराश । आत्म कमल मुज खोलीने, करजो लब्धि प्रकाश ॥ अभिनंदन० ॥ ६ ॥



(२)

(ठुमरी)

ध्यान धर ले हो प्यारे जिअरवा, अभिनंदन सुखकारा रे ॥ अंचली ॥ प्रभुगुणका कोउ पार न पावे, इंद्र मुनींद्र पग हारा रे । किस तरह गुण गाउं मेरे जिनका, न करे काम मन मारा रे ॥ ध्यान० ॥ १ ॥ गुण गाने को गुणी मन मोरा, तलस रहा अति भारा रे । बाल सागर का माप करे ज्युं, कलम त्युं करमें धारा रे ॥ ध्यान० ॥ २ ॥ लाख चोरासी योनि जिनवर ! भटक भटक दुःख धारा रे । आनंदसे अब शरण ग्रही प्रभु, दुःख का हुआ विसारा रे ॥ ध्यान० ॥ ३ ॥ मुझ मन कमलमें तुझको धारा, तुं मुज हृदय का हारा रे । निश-दिन घट में मनाउं तोरा मुजरा, शिवपद लब्धि आधारा रे ॥ ध्यान० ॥ ४ ॥



"श्री सुमतिनाथ-स्तवन ।"

(विमलाचलवासी मारा व्हाला सेवकने विसारो नहीं-ए देशी)

सुमतिजिन सुखकंद व्हाला ! सेवकने तारो सही, उगारो सही, भव बीच हुं दुःख अति पामुं सर्वज्ञ सवि जाणो सही, सत्य मानो सही ॥अंचली॥ मोह हत्यारो दुःख करनारो, मारे छे बहु मार । काल अनादिथी ते नडीयो, आपे न कोई आधार॥ सेवकने० ॥ १ ॥ काल अनादिनुं केदखानुं, निगोद जेनुं नाम । काल अनादि बांधी पूर्यो, त्यां मने महादुःख धाम ॥ सेवकने० ॥ २ ॥ अनायास ते बेडी तूटी, कर्यो न कांइ उपचार । पुण्यउदय हवे नरभव पामी, हुं आव्यो तमारे दरबार ॥ सेवकने० ॥ ३ ॥ पण वच वचमां विचार आवे, कदी न पकडी फेर। तेह ज स्थाने बांधी राखे, करे पूरुं निज वेर ॥ सेवकने० ॥ ४ ॥ तेह केदथी तमे प्रभु निकली, करायो तेनो नाश। जेह रीतथी ते मुज शीखवो, तेने मारी करूं पूरी आश ॥ सेवकने० ॥ ५ ॥ हरि हर ब्रह्मादिने विडंब्या, कर्या पोताना दास । ते ज मोहनो चूरो करवा, बन्या समर्थ तमे खास ॥ सेवकने० ॥ ६ ॥ तेम जाणी तुम शरणुं लीधुं, पूरो

मारी आश । आत्म कमलमां शक्ति मूको, तारो लब्धि निज दास ॥ सेवकने० ॥ ७ ॥

—————:०:—————

" श्री पद्मप्रभु-स्तवन । "

(मान मायाना करनारा रे-ए देशी)

प्यारा पद्मप्रभु सुखदाया रे, जेनी अति शीतल छे छाया । पेखी लेने तुं पुस्तक पुराणा रे, केवा एमना गुण छे लखाणा ॥ अंचलो ॥ जूठा कुदेवा जूठी एनी सेवा, जूठे छे जग भरमाया । समजु तो समजो जुदा थया पण, बालिश बिचारा सपडाया रे । जेनी अति शीतल छे छाया ॥ प्यारा० ॥ १ ॥ मिथ्यात्वमोहना उदयथी भाई !, घणा जीवो कुदेवमां फसाया । मोहना झपाटाथी कोण बच्युं छे ?, शिवाय जिन जिनराया रे ॥ जेनी० ॥ प्यारा० ॥ २ ॥ पद्म सुदेवा करो जिन सेवा, मेळवशो मोक्षना मेवा । जिन भजे ते जिनगुण पामे, रागी सेव्या ते रागे भराणा रे ॥ जेनी० ॥ प्यारा० ॥ ३ ॥ प्रभु न कर्त्ता हर्ता जगतना, नहीं राग द्वेषमां फसाया । जे रागी द्वेषी तेने प्रभु न कहीये, शास्त्रोमें एम फरमाया रे ॥ जेनी० ॥ प्यारा० ॥४॥ पद्मप्रभु मारा हृदय कमलमां, स्थिर वास स्थान जमाया । महापुण्यना उदये व्हाला, लब्धिए जिनगुण गाया रे ॥ जेनी० ॥ प्यारा० ॥ ५ ॥

—————:०:—————

(२)

(राग–शा माटे श्रम करे सति तुज पति भक्ति साची)

पद्म प्रभुजी प्यारा दिलमें सदा तुमे धारा, हरो रही अं-
तर मल मारा।

साखी—भटक भटक भव वन विषे, पाया भय अपार।
पुण्यवसे निर्भय करुं, लियो जिणंद आधार॥

कर निर्भय लिया शरणा थारा (२), तुम विन और न तारक
मारा (२)। कृपानाथ, मम प्राणनाथ, प्रभु तुंही तुंही प्यारा॥
हरो रही० ॥ १ ॥

साखी—रटे वेदांतिक ब्रह्मको, स्मरे रामानुज राम।
कृष्ण कृष्ण कोइ कहे, मारे तुमसे काम॥

एक आशी को न करीये न कारा (२), करे न कार पडे दुःख
भारा (२)। जगतनाथ मैं हुं अनाथ, मम खरा शरण थारा॥
हरो रही० ॥ २ ॥

साखी—आत्म कमलमें जिन तुमे, रटी रहा दिन रात।
मुज घट अंतर लब्धिको, करो विभु विख्यात॥

तारक बिरुद तुमे प्रभु धारा (२) कायम रहेगा नहीं विन
तारा (२) कृपानाथ, मम ग्रही हाथ, करो शिवरमणी हारा॥
हरो रही० ॥ ३ ॥

" श्रीसुपार्श्वनाथ–स्तवन । "

(दास परे दया लावो रे-ए देशी).

रंक परे दया लावो रे, सुपार्श्वदेवा ! रंक परे दया लावो ॥ अंचली ॥ नथी पूरो व्रतधारी, नथी हुं तो शुद्धाचारी । मति विकारी मारी मारी रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ १ ॥ तमे छो केवलज्ञानी, बधी मारी वातो जाणी । तो पण उपेक्षा भावो भावो रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ २ ॥ भव अटवीमां भटक्यो, गर्भमां उंधो लटक्यो । त्यां महादुःख खटक्यो खटक्यो रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ ३ ॥ अनंत सुख धारी !, पडे मने दुःख भारी । व्हारे मारी तो आवो आवो रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ ४ ॥ पडुं अनीति कूपे, रमुं नहीं निजरूपे । अवगुण नहीं तुमथी छूपे छूपे रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ ५ ॥ निजातमरूप धारी, तुमे छो निर्विकारी । दीठो नहीं देव आवो आवो रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ ६ ॥ विजयकमलसूरि, चरणोमां भक्ति भूरि । नाख्युं मिथ्यात्व-चूरी चूरी रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ ७ ॥ लब्धि ए गुण पायो, आगे छे तुमथी दावो । महेर नजर थाओ थाओ रे ॥ सुपार्श्वदेवा० ॥ ८ ॥



" श्रीचंद्रप्रभु-स्तवन । "

(सुण दयानिधि, तुज पद पंकज मुज मन मधुकर लीनो—ए चाल.)

सुणो चंद्रप्रभु !, मुज मन चातक तुम वाणी वरसा बनी, ॥ अंचली ॥ तमे सुखरूप जलना दरिया छो, तमे गुणरत्नोथी भरिया छो। तमे महा गंभीर पद वरिया छो ॥सुणो०॥ १ ॥ प्रभु मुख शारद पूनम चंदो, मन चकोर जोइ आनंदो । हरे भवो भव अंध अटन फंदो ॥ सुणो० ॥ २ ॥ प्रभु ! महासेननृप नंदन छो, भवतप्त जीवोने चंदन छो । मुज आतमगुणना मंडन छो ॥सुणो० ॥ ३ ॥ जिन भाल अर्ध्ध शशी सम शोभे, देखतां भविजन मन लोभे। प्रभु देखो करम कटक क्षोभे ॥ सुणो० ॥ ४ ॥ प्रभु नेत्र कमल दल सम सारां, नित्य वहे छे ज्यां अमृतधारां। प्रभु श्राद्ध साधु मन हरनारां ॥ सुणो० ॥ ५ ॥ तुम वाणीथी भव फरी गयो, मिथ्यात्व दुर्गुण मरी गयो। मानुं आतम मारो तरी गयो ॥ सुणो० ॥ ६ ॥

———:o:———

(२)

(राग-कव्वाली)

चंदा प्रभुजी प्यारा, मुझको दियो सहारा । तुम्हे कर्म कठ वारा, उसने हमे है मारा ॥चंदा०॥१॥ मैं त्राहि त्राहि करता,

चरणोंमें तेरे पडता । क्यों नहीं दुःखोंको हरता, महामोहसे हुं मरता ॥ चंदा० ॥ २ ॥ करुणा समुद्र तूं है, नहीं तुझसे कोइ आला । मुझ मन बना है पक्षी, तुम गुणगणो हैं माला ॥ चंदा० ॥ ३ ॥ नरकादिको में रुला, तुम नामको जो भूला । उसके बिना सहारे, पाया है दुःख अमूला ॥ चंदा० ॥ ४ ॥ अब पुण्य वायु वाया, करमे विवर दिखाया । सम्यक्त्व चित्त धारा, तब पाया तुम दिदारा ॥ चंदा० ॥ ५ ॥ आतम कमल दिनेश्वर, दुर्लभ प्रभु जिनेश्वर । निजशक्ति संपदा दो, शिशु लब्धि को बचा लो ॥ चंदा० ॥ ६ ॥

" श्रीसुविधिनाथ–स्तवन । "

(होई आनंद बहार रे—ए देशी)

सुविधिनाथ जिनचंद रे, प्रभु प्रेमे प्रणमीए, प्रेमे प्रणमीए, भव दुःख हणीए ॥ सुविधिनाथ० ॥ ए अंचली ॥ जग जीव तारक सब दुःखहारक, स्मारक निजगुण वृंद रे ॥ प्रभु० ॥ सुविधिनाथ० ॥ १ ॥ सुग्रीव तात ने रामा मात. लंछन मगर सोहंत रे ॥ प्रभु० ॥ सुविधिनाथ० ॥ २ ॥ प्रभु मुखमुद्रा मानुं सोहे, मोह तिमिर दिणंद रे ॥ प्रभु० ॥ सुविधिनाथ० ॥ ३ ॥ वाणी चंदन सम शीतळ छे, हरे त्रिविध जन फंद रे ॥ प्रभु० ॥

सुविधिनाथ० ॥ ४ ॥ महागोप निर्यामक जगमां, सकल जीव सुखकंद रे ॥ प्रभु० ॥ सुविधिनाथ० ॥ ५ ॥ लोकालोक प्रकाशक व्हालो, आतम लब्धि लहंद रे ॥प्रभु०॥सुविधिनाथ०॥६॥

" श्रीशीतलनाथ–स्तवन ।"

(सुणो बी जिणंदा चरण शरण लिया तेरा–ए देशी)

श्रीशीतलजिणंदा ! ध्यान धरुं हुं हवे ताहरुं॥ अंचली ॥ अंतराय (५) पण दूर करीने, (६) हास्य दूषण निवार्युं । (७) अरति (८) रतिनो नाश करीने,टाळ्युं (९) भयनुं बारुं रे ॥ श्रीशीतल० ॥ १ ॥ (१०) शोक (११) जुगुप्सा दूषण वरजी, (१२) काम कटकने मार्युं । मिथ्या (१३) मोहनो मद उतारी, तोड्युं (१४) अज्ञान अकारुं रे ॥ श्रीशीतल० ॥ २ ॥ वेरण (१५) निद्राने तमे वारी, (१६) अविरति दूषण वार्युं । (१७) राग (१८) द्वेषने दूर करीने, राज्य पोतानुं धार्युं रे ॥ श्रीशीतल० ॥ ३ ए अष्टादश दूषण वारी, प्रभुता पद तमे साध्युं । ते पद मेळववा श्रीजिनजी !, मन तलसे छे मारुं रे ॥ श्रीशीतल० ॥ ४ ॥ हरि हर ब्रह्मा कुदेवो ए, स्थान एओने आप्युं । निज आतममां तेथी तेमनुं, मुखडुं न लागे सारुं रे ॥ श्रीशीतल० ॥५॥ प्रभु ! तमारी निशदिन दिलमां, वीतरागता ध्यावुं । आत्म कमल विकसावो व्हाला ! । निज लब्धि भर पाउं रे ॥ श्रीशीतल० ॥६॥

———:०:———

" श्री श्रेयांसनाथ–स्तवन ।"

(वीर च णमां जाय मेरो मन लागी रह्यो
महावीर—ए देशी.)

(राग—धनाश्री)

श्रेयांसजिन सुखकार, सेवो तमे श्रेयांसजिन सुखकार ॥ अंचली ॥ श्रेयस् करता जगजीवोनुं, हरता सकल दुःखभार ॥ सेवो तमे० ॥ १ ॥ सिंहपुरवासी पाप निकासी, विष्णु कुले अवतार ॥ सेवो तमे० ॥ २ ॥ कर्मचूरण अध्यातम पूरण, अंतरजामी आधार ॥ सेवो तमे० ॥ ३ ॥ निज नाणे करी ज्ञेय बधांने, क्षणे क्षणे कलना ॥ सेवो तमे० ॥ ४ ॥ आतमरामी जग वेसरामी, हरत मोह विकार ॥ सेवो तमे० ॥ ५ ॥ आत्म कमल विकसावे ए भानु, लब्धि तणो दातार ॥सेवो०॥६॥

बुह ामंडन

" श्री वासुपूज्यस्वामि–स्तवन । "

(शुं कहुं कथनी मारी राज.......ए राग)

वासुपूज्य प्रभु निरख्या आज, वासुपूज्य प्रभु निरख्या । रोम रोम तनु हरख्या आज ॥वासु०॥ अंचली॥पुण्य पटह त्रण भुवने वागे,तुम शासनना रागे । महाभाग्ये प्रभु ते मुज मळीयुं,आव्यो

तुम्हारी आगे राज ॥ वासु० ॥ १ ॥ ज्ञान चारित्रमां प्रभु हुं स्फूर्त्ति, पासे तमारी याचुं। ज्यां सुधी प्रभु ते नही आपो, त्यां सुधी काम बधुं काचुं राज ॥ वासु० ॥ २ ॥ दिन अनाथ सेवकनी अरजी, मानो न मानो मरजी । पण मारो आधार न न बोजो, एक तमारो छुं गरजी राज ॥ वासु० ॥ ३ ॥ आगम वादे जाणुं जिनजी, तार्या प्रभुए अपार । पण जो मारो आतम तारो, तो थाय साक्षातकार राज ॥वासु०॥४॥ सोहे 'कमल' सम विकसित मुखडुं, 'लब्धि' तणा दातारी । बाह्य 'लक्षण' अष्ट सहस्र, अभ्यंतरमां अपारी राज ॥ वासु० ॥ ५ ॥ त्रण 'भुवन' छाजे ठकुराई, जगजयवंत 'जयंत'।'नवीन' होय ए अनुभव जेने, ते करे भवनो अंत राज ॥ वासु० ॥ ६ ॥ आत्म कमल लब्धि विकाशक, जिन ! तुज दरिसण जोरो । बुहारीमां एम विचारुं, मोह रह्यो हवे रोतो राज ॥ वासु० ॥ ७ ॥

(२)

(राग–महावीर तमारो मोहन मूर्ति देखी....)

वासुपूज्य जिनेश्वर जोई मारुं दिलडुं हरखाय ॥ अंचली ॥ प्रभु सर्व देव गरिठो, में जगमां और न दिठो। लागे मुज मन अति मिठो रे, मन तृप्ति नव थाय ॥ वासु० ॥ १ ॥ प्रभु एक

अनेकी जगमें, तुज भक्ति मुज रग रगमें । नहीं माणेक होय नग नगमें रे, तिम दुर्लभ जिनराय ॥ वासु० ॥ २ ॥ प्रभु निमोदमें नही मिलियो, त्यां काल अनंतो रुलियो । थावर द्विति चउ भूलियो रे, विन दर्शन दुःख पाय ॥ वासु० ॥ ३ ॥ अब पुण्य उदय में पायो, सन्नी पंचेंद्रीमें आयो । तब दर्शन नाथ दिखायो रे, लेऊं आणा शिर चढाय ॥ वासु० ॥ ४ ॥ प्रभु स्थिर बोधी हुं मागुं, निज आत्मभावमां जागुं । मेरी तेरीसे भागुं रे, ए आपो महाराय ॥ वासु० ॥ ५ ॥ मुज तत्त्वत्रयी प्रभु आपो, तुम हस्त शिर पर स्थापो, भव भ्रमणा मारी कापो रे, पामर पे दिल लगाय ॥ वासु० ॥ ६ ॥ खूब गाम बुहारी सोहे, तूम धाम मुज मन मोहे । प्रभु जोई मोह अति खोहे रे, अब हटशे मोहराय ॥ वासु० ॥७॥ मुज आत्म कमल विकसावो, लब्धि लक्ष्मी निवसावो । हुं राखुं तुमथी दावा रे, तुम चरणे चित्त ठाय ॥ वासु० ॥ ८ ॥

सुरतमंडन

" श्रीवासुपूज्यस्वामि–स्तवन। "

(बोलो मारा प्रेमी पोपटजी बोल....ए राग)

सेवो मारा प्यारा ! वासुपूज्य सेवो, सेवो सेवो मुक्तिनो मेवो । ज्ञान जेणे पीधुं, सर्वज्ञ पद लीधुं, लीधुं लीधुं थया देवा-

धिदेवो ॥अंचली॥ सेव भाइ! सेव सुदेव पीछाणी, ज्ञान दर्श चारित्र पद मर्म जाणी। वख्त फेर आवे न एवो, एवो एवो मुक्तिनो मेवो ॥ १ ॥ राग द्वेष जीत्या जे भावने प्रमाणी, आगमथी जाणी ए भाव दिल आणी। बनीश एथी तुं जिन-राज जेवो, जेवो जेवो मुक्तिनो मेवो ॥ २ ॥ जेम नृप सेवे नृपति पद पामे, तेम जिन सेवे सोहे जिन ठामे। शुद्ध देव सेवामां दाखलो ए लेवो, लेवो लेवो मुक्तिनो मेवो ॥ ३ ॥ भव घणा भटकी भगवद्भक्ति पाम्यो, घणा करी यत्नो मि-थ्यात्वने वाम्यो। जिनराज सेवो पार कर खेवो, खेवो खेवो मुक्तिनो मेवो ॥ ४ ॥ आत्म कमलमां जो जिनजी बिराजे, अष्ट करमनो झघडो तो भाजे, लब्धिना दिलमां रमे एह देवो, देवो देवो मुक्तिनो मेवो ॥ ५ ॥

" श्रीविमलनाथ–स्तवन। "

(धारणी मनावे रे मेघकुमारने–ए देशी)

पूजो विमलप्रभु निर्मल आतमा रे, बनशे तुम निरधार। जल सेवनथी मेल दूरे टळे रे, करी ल्यो एह विचार ॥ पूजो० ॥ १ ॥ वाणी पांत्रीश नाथ गुणे भरी रे, तारे भव्य समाज। वाणी मधुरता जेना मन वसी रे, तत्त्व सहित ले स्वराज ॥ पूजो० ॥ २ ॥ वाणी विस्तारे रे योजन तक प्रभु रे, स्वस्व-

भाषा समजाय। केवो सुंदर ए प्रभु अतिशयो रे,वर्णवी नहीं रे शकाय ॥ पूजो० ॥ ३ ॥ रोगो पुराणा जोइ चिकित्सको रे, धोवे हाथ करतां उपाय। रोग अनादि कर्म मटाडवा रे, जिनवर तत्पर थाय ॥ पूजो० ॥ ४ ॥ वंदो लोकोत्तर एवा वैद्यने रे, सादि अनंत दिये सुख। रोज सवारे उठी जोइए रे, ए उपकारीनुं मुख ॥ पूजो० ॥ ५ ॥ होय अनंती राशी पुण्यनी रे, त्यारे प्रभु दरश लहंत। आतम कमल रुडुं खीले दर्शथी रे, वळी मळे लब्धि महंत ॥ पूजो० ॥ ६ ॥

" सुरत मंडन श्रीअनंतजिन-स्तवन।"

(राग-भक्ति नौकामां बेशीने अमे भव तरीये.)

भविकजन! भावे भजिये भवोदधि तरणी,दधितरणो रे शिवपुर सरणि, भविक० ॥अंचली॥ अनंत जिन नमो अधिक प्रेमथी रे, काढी कचवरने करो शुद्ध करणी ॥ भविक० ॥ १ ॥ आत्मविलासी व्हालो देव नगीनो रे, आपे शिव सद्म प्यारो! भव हरणो ॥ भविक० ॥ २ ॥ मिथ्यातम मेटी मोटा भाग्ये जुहारी रे, सुरत प्रभुजीनी शिवकरणा ॥ भविक० ॥ ३ ॥ सुरत शहेरमांही वाडीमां दीपता रे, श्रीमुख ज्योति दुःख तम तरणि ॥ भविक० ॥४॥ आतम कमल सर्व लब्धि विलासी रे, सेवा ए जाणो सुख बीज धरणी ॥ भविक० ॥ ५ ॥

---

(२)

(धर्मजिनेश्वर गाउं रंगशुं-ए देशी)

अनंतजिनेश्वर मानसरोवरु, क्रीडक मुज मन सुंदर हंस जिनेश्वर । सिंहसेननृप कुल नभमां चंद्लो, करे कर्म तिमिर विध्वंस-जिनेश्वर ॥ अनंत० ॥ १ ॥ सुजसा माता कुखथी जनमीयो, आशा पूर्व थकी जिम भाण जिनेश्वर । सुंदर संजम श्रीजिन पालीने, पाम्या पूरुं हो नाण जिनेश्वर ॥ अनंत० ॥ २ ॥ नाण नयणथी जग निहालतां, देख्युं दुःखी हो अत्यंत जिनेश्वर । ते उद्धरवा प्रभुजी स्थापीयुं, शासन सुखप्रद हो अनंत जिनेश्वर ॥अनंत०॥३॥ धन धन शासन प्रभु तुज धन्य छे, चतुरंग जेनां हो पवित्र जिनेश्वर । भव अब्धिमां द्वीप बचाववा, मोह ताप हरवा हो छत्र जिनेश्वर ॥ अनंत० ॥ ४ ॥ बलिहारि जिन ! त्हारा धर्मनी, हरिए जेथी हो कर्म जिनेश्वर । तुज गुण गातां आतम निरमळो, करी भवि लेवे शिव शर्म जिनेश्वर ॥ अनंत० ॥५॥

" श्रीधर्मनाथ-स्तवन । "

(राग-सिंहनो कन्नरो.)

धर्मजिनेश्वर प्रीते गाउं, गुण गातां मनमां हर्षाउं ॥ अंचली ॥ काल अनंतो में छे गमायो, नाथ निरंजन हाथ न आयो

॥ धर्म० ॥ १ ॥ नाथ नेरंजन हवे हुं पायो, मानुं सब अघ दूर भगायो ॥ धर्म० ॥ २ ॥ भानु नंदन करो मने अंजन, भ्रम नसाडो करो मन रंजन ॥ धर्म० ॥ ३ ॥ निरंजन करे अंजन केवुं ?, न होय फेर भवे मज्जन तेवुं ॥ धर्म० ॥४॥ निमित्तना अवलंबनथी ए, निज विचारे घटना करीए ॥ धर्म० ॥५॥ आतम लब्धिना हो विलासी, पामी हवे हुं न रहुं उदाशी ॥धर्म०॥६॥

" वायापुरी मंडन श्री शांतिजिन-स्तवन। "

(राग-सा ंग)

तमे जोजो जोजो रे, शांतिनो प्रताप तमे जोजो जोजो रे ॥ अंचली ॥ त्रिजगमां तुलना जेनी, करी शके न कोय। अधिक अधिक तेजो भावे, गमे तेवो पण होय॥ तमे० ॥ १ ॥ विश्वसेन नृप कुलमां तिलक, शीलक शुद्धाचार। वारक मार विकार जेनी, वाणी अमृतधार ॥ तमे० ॥ २ ॥ तीर्ण तारक जेता जापक, स्थापक शासन सार। मनीषो मन चकोर चंदो, भविक हृदय हार ॥ तमे० ॥ ३ ॥ भाविक भव्य 'कमल' कोश, विकाशी विलास। 'दान' अमान आपे दानी, क्षायिक 'लब्धि' खास ॥ तमे० ॥ ४ ॥ 'हिम्मत' भारी हृदयधारी, चोसठ सहस नार। खटखंड राज्य क्षणमां त्यागी, लीधो संजम भार ॥ तमे० ॥ ५ ॥ 'केसर' केरा कीच करीने, सेवे नर सु-

रेश । समता भावे लीनो साहेब, वाहे काल अशेष ॥ तमे० ॥ ६ ॥ 'मंगल' मुखना लटके चटके, मोह्या त्रिभुवन लोक । स्वर्ण 'मेरु' सम धैर्यधारी, काप्या कर्मना थोक ॥ तमे० ॥ ७ ॥ 'निपुण' चारित्र पालन शूरो, 'चंपक वास सुवास । चारित्रस्थान असंख्य स्पर्शी, यथाख्याते कर्यो वास ॥ तमे० ॥८॥ सुरासुरेंद्र वर 'नरेंद्र', प्रीते प्रणमे पाय । 'केवल' ज्ञान पामी प्यारो, समवसरणे ठाय ॥ तमे० ॥ ९ ॥ धर्म आदि द्रव्य 'लक्षण' भेदे, करे व्याख्या विस्तार । 'भुवन' तारण कारण व्हालो, भावदया गुणधार ॥ तमे० ॥ १० ॥ सप्तनयी सप्त धारा द्वारा, मिथ्या मल हरनार । अ-लौकिक कोइ अनुभव गम्या, शांतिनी दातार ॥ तमे० ॥ ११ ॥ 'जयंत' तात आदि आवे, प्रीते सर्व सुरेश । ब्रह्मा नमे शिव नमे, नमे छे हृषीकेश ॥ तमे० ॥ १२ ॥ संवत ओगणी एकाशी मां, छायापुरीमां खास । 'लब्धिसूरिए' सुदी पांचमे, स्तव्या मागसर मास ॥ तमे० ॥ १३ ॥

———:०:———

" जलालपुर मंडन–श्री शांतिजिन–स्तवन । "

(जमना तणे किनारे, गोपाल गो चरावे–ए तरज)

(राग–भीमपलाशनी कव्वाली)

विख्यात विश्व व्हाला, शांतिप्रधान तुं है ॥ अंचली ॥

आये आंचरोदरमें, हुई शांति दुनिया भरमें। ऋणी जगत तुम्हारा, तारक देव तूं है ॥ विख्यात० ॥ १ ॥ यशोमतिका प्यारा, विश्वसेन नैन तारा। उद्धार कर हमारा, उद्धारकोंमें तूं है ॥ विख्यात० ॥ २ ॥ खरा कल्प कामधेनु, चिन्तामणि चुनींदा। आया है हाथ हमारे, चूरक दुःखोंका तूं है ॥ विख्यात० ॥ ३ ॥ फैली अशांति अब है, असहिष्णुताकी कब है। उसका करो सुधारा, सुधारकोंमें तूं है॥ विख्यात० ॥ ४ ॥ जलालपुर राजे, विशाल चैत्य छाजे। उसमें प्रभु बिराजे, विराजमान तूं है ॥ विख्यात० ॥५॥ आतम कमलमें सोहे, लक्ष्मी अखूट जो है। दियो उसकी लब्धि प्यारा!, लब्धि विधान तूं है ॥ विख्यात० ॥ ६ ॥

“ श्री शांतिनाथ–स्तवन। ”

(राग–सरफरोशीकी तमन्ना.)

पूज लो श्री शांतिस्वामी, शांति के आगार है। छब निराली सबसे आली, धर्मके दातार है॥ पूज लो० ॥ १ ॥ इल्म है लाइन्तहा और, त्याग बेसुमार है। ब्हार है बे अंत जिस्में, ताक्तका नहीं पार है॥ पूज लो० ॥ २ ॥ नहीं राग है नहीं द्वेष जिस्में, सबर बे मिसाल है। इससे नहीं कोइ देव आला, ऐसा मेरा ख्याल है

॥ पूज लो० ॥ ३ ॥ [illegible] नहीं ध्यान होता, आपकी अय शिरताज । काबीले देदार सुरत, देख कर करता हुं नाज ॥ पूज लो० ॥ ४ ॥ आत्म लब्धि वशकीनी है, न इन्से कोइ उदार है । जिसने इनके चरण सेवे, उसका बेडा पार है ॥ पूजलो० ॥ ५ ॥

(२)

(राग–नंदके लाला हेमतवाला.)

शांतिजिन व्हाला, दीन दयाला, तत्त्व विचारे तुं ईश हो ॥ अंचली ॥ राग द्वेषको झेर किया है, झेर कियेमें तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ १ ॥ जन्म मरण प्रभु मार भगायो, मार भगानेमें तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ २ ॥ प्रभु विरागी न रास रचत है, रास रचे सो नहीं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ ३ ॥ क्षणभंगुर जग माया छोडी, त्यागी विरक्त तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ ४ ॥ नहीं कर्ता नहीं हर्ता जिनजी, घट घट ज्ञाता तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ ५ ॥ जगत जमनामें कर्म कालीय, नाग नथैया तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ ६ ॥ ध्यान बले निज केवल ज्योति, घट जगैया तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ ७ ॥ दो चउमास पाडोश में रखकर छाणी राधनपुर तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ ८ ॥ आत्म कमलमें लब्धि विकाशी, तार सेवक निज तुं ईश हो ॥ शांतिजिन० ॥ ९ ॥

——:o:——

(३)

(देखके देदार उनका दिल दिवाना हो गया–राग)

देखकर श्री शांतिस्वामी, चित्त आनंदसे भरा। रोमांच हैं सब लहेरे लेते, जैसे बाग हरा भरा॥ १॥ सुख शांति देते नाम लेते, जो इन्होंका रोज है। नहीं जरा संदेह इस्में, अटल मेरा खोज है॥ २॥ ज्योत मुखकी चंद्र जैसी, हरती मोह अंधेरको। शांत छाया हरती माया, और हरे दुःख केहेरको॥ ३॥ भाग्य मेरा अतुल जिससे, पाया जिन देदार है। मिथ्यात्वकी स्थितिपाकसे, ये मिल गया दरबार है॥ ४॥ आत्म कमल प्रफुल्ल करते, सूर्य जैसे जिनवरा। लब्धि के भंडार स्वामी, जगत्में ये प्रभु खरा॥ ५॥

———:०:———

"श्री कुंथुनाथ–स्तवन।"

(जइ पूजो लाल समेतशिखरगिरि उपर पासजी सामला–ए देशी)

भजो कुंथुनाथ भक्तिभरे करी निज आतमने तारवा, प्रभु पूजो लाल करम हणीने मोक्ष तणां फळ धारवा। अंचली॥ लेवा दर्शन नित्य दरश करीए, प्रभु पूजी अतीव हरस धरीए। एथी भवांतरे दर्शन वरीए॥ भजो० ॥ १ ॥ ए प्रभुए मुज

कामण कीधुं, चितडुं मारुं चोरी लीधुं । प्रभु दर्शनामृत छे में पीधुं ॥ भजो० ॥ २ ॥ जेणे मोहमल्ल डामीश कर्यो, कैवल्य-ज्योति प्रकाश धर्यो । वळी सुंदर शिवरमणीने वर्यो ॥ भजो० ॥ ३ ॥ प्रभु दुःख दोहगना हरनारा, प्रभु आतम गुणना भर-नारा । प्रभु ध्याता ध्येय पद वरनारा ॥ भजो० ॥ ४ ॥ प्रभु धर्म तणा छे दातारी, निज वाणीथी ममताहारी । एमां कांइक म्हारी पण उतारी ॥ भजो० ॥ ५ ॥ आतम लक्ष्मी जिन-वर वरीया, निज आत्म कमल निर्मल करीया । प्रभु लब्धि निरावरणी धरीया ॥ भजो० ॥ ६ ॥

---

(२)

(राग-गजल.)

कुंथुजिन मेरी भव भ्रमणा, मिटादोगे तो क्या होगा, ॥ अंचली ॥ चोराशी लाख योनिमें, प्रभु में नित्य रूलता हुं । दयालु दास को तेरे, बचालोगे तो क्या होगा ॥ कुंथु० ॥ १ ॥ घटा घन मोहकी आइ, छटा अंधेरकी छाइ । प्रकाशी ज्ञान वायुसे, हटादोगे तो क्या होगा ॥ कुंथु० ॥ २ ॥ अहो प्रभु नामका तेरे, सहारा निशदिन चाहुं । समर्पी प्रेम अंतरका, बकासोगे तो क्या होगा ॥ कुंथु० ॥ ३ ॥ नहीं है काम सोनेका, नहीं चांदी पसंद मुजको । चाहुं मैं आत्मकी ज्योति,

। खादोगे तो क्या होगा ॥ कुंथु० ॥ ४ ॥ सची में देवकी सुरत, तुम्हारे में निहाली है। लगा है प्रेम इस कारण, निभालोगे तो क्या होगा ॥ कुंथु० ॥ ५ ॥ कमल जैसा तेरा मुखडा, देखा छायापुरी मांही; बना लब्धि भ्रमर इसमें, छुपा लोगे तो क्या होगा ॥ कुंथु० ॥ ६ ॥

———:०:———

"श्री अरनाथ–स्तवन।"

(सिद्धिए नमुं सिद्ध अनंता–ए देशी)

सेवो श्री अरनाथ जिणंदा, अनि हो म्हारा व्हाला रे। सेवो० ॥ प्रभु अष्टादश जिनचंदा, हरे अष्टादश पाप कंदा। अरे ए तो सुदर्शननृप नंदा रे ॥ सेवो० ॥ १ ॥ प्रभु सर्व विषयोना त्यागी, ममता राक्षसो गइ भागो। एथी हुं तो बन्यो अनुरागी रे ॥ सेवो० ॥ २ ॥ विभु वरवाणी वीणा वागी, मारी ज्ञान-दशा हवे जागी। मारी सूरत प्रभुजीसें लागो रे ॥ सेवो० ॥ ३ ॥ विभु वीतरागी विराजे, रागोमां प्रभुता नवि छाजे। तेथी रागी हुओ जिनराजे रे ॥ सेवो० ॥ ४ ॥ प्रभु आतम लक्ष्मी लहंदा, टाळे जन्म मरणना फंदा। जग ताप हरे जिन-चंदा रे ॥ सेवो० ॥५॥ निज आत्म कमल मकरंदा, देखी मुज मन भ्रमर आनंदा। एनी लब्धि लागे सुखकंदा रे ॥ सेवो० ॥६॥

———:०:———

"श्री मल्लिनाथ-स्तवन।"

(केसराया थाशुं विनती करूं रे साचा भावशुं-ए देशी)

मल्लिजिनस्वामी ! आव्यो तमारा दरबारमां ॥ अंचली ॥ काल अनंतो भम्यो रूल्यो, गति निगोद मझारी । श्वासमांही भव सत्तर कीधा, दीठी न सुखनी बारी रे ॥ मल्लि० ॥ १ ॥ नदीघोलना न्याये पत्थर जेम, गोल मोल हो जावे । तेम अकामे करम झरंतां, व्यवहार पद पावे रे ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ पृथ्वी पानी तेउ वाउ, वनस्पतिमां रूलीयो । त्यांथी थोडा पुण्य उदयथी, विकलेंद्रियमां भलियो रे ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ त्यां पण टाढ तडको आदि, वेठी दुःख अपार । शांत स्वभावे पुण्य थयाथी, पंचेंद्रिय अवतार रे ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ गाडे जोड्यो एके जोड्यो, आरे तोड्यो चाम । कष्ट सह्याथी हलको थइ हुं, पाम्यो नरवर धाम रे ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ आर्यक्षेत्रे श्रावककुले, पुण्य उदय हुं आयो । अढी वर्षनी वाल उम्मरमां, दरबार तुम पायो रे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ ठाठ माठने भभको देखो, अचरिज हुं तो होतो । दरबार रूप जे हवे समज्यो, त्यारे समज्यो नहोतो रे ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ स्वरूप समजी हाजर होवे, ते ले उत्तर ध्यान । आतम लब्धि शुद्ध वरीने । पामे पद निर्वाण रे ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥

———:०:———

" श्री मुनिसुव्रत स्वामि–स्तवन । "

(श्रीपासजी प्रगट प्रभावी–ए देशी.)

मुनिसुव्रत प्रभु गुण गाउं, प्रभु मूरति मनमां ध्याउं रे। मनमोहना जिनराया ॥ अंचली ॥ में तो मुनिसुव्रत ओळखीयो, मानुं भव दरियो हवे तरियो रे ॥ मनमोहना० ॥ १ ॥ व्हालो भव पाथोधि जहाज, आपे शिवपुर अविचल राजरे ॥मनमोहना०॥२॥ प्रभु आनन ज्योति शोभे, देखी मोह चरट अति क्षोभे रे ॥ मनमोहना०॥३॥ हुं तो भव अटवीमां भटक्यो, तारा दर्श थकी ज्यारे छटक्यो रे ॥मन मोहना०॥४॥ कुदेव विषे हुं [illegible], छोडी सोनुं पित्तल मन भायो रे ॥मनमोहना०॥५॥ करी माखणनी में आशा, ते तो पाणी वलोव्युं निराशा रे ॥मनमोहना०॥ ६ ॥ मारो पुण्यतरु हवे फलीयो, मने देवाधिदेव तुं मलीयो रे ॥ मनमोहना० ॥ ७ ॥ नवि छोडुं हवे हुं कदाय, भले तन टुक हो जाय रे ॥मनमोहना०॥८॥ मल्या आतम लब्धि विलासी, ए तो सूरि कमलने शाबाशी रे ॥ मनमोहना० ॥ ९ ॥

———:०:———

" श्री नमिनाथ–स्तवन । "

(विमलाचल विमला प्राणी–ए देशी.)

नमिनाथ जिनेश्वर साचो, पामी रत्न न काचमां राचो ।

कुदेव विषे नवि माचो, एनो संग भविक छे काचो॥ जिनेश्वर संगनी बलिहारी ॥ बीजो नहीं कोइ मुक्तिदातारी ॥ जिनेश्वर० ॥ १ ॥ मिथिला नगरीना राया, वप्रादेवी सुत कहाया । नीलकमल लंछन पाया, जेमनो अति शीतल छाया ॥ जिनेश्वर० ॥ २ ॥ प्राणत कल्पथी प्रभु आया, हरवा जग जुठी माया । प्रभु संयम सुंदर पाया, चार घातो करमने हठाया ॥ जिनेश्वर० ॥३॥ प्रभु केवललक्ष्मी वरीया, प्रभु देश विदेश विचरीया । महामोह अंध तम हरीया, प्रभु वाणीथी लोको तरीया ॥जिनेश्वर०॥४॥ शैलेशीकरण प्रभु करीयुं, अघातीकरम पण हरीयुं । निज राज्य सकल जिने धरीयुं, गया मुक्ति कारज सवि सरीयुं ॥ जिनेश्वर० ॥ ५ ॥ एवा जिन चरणे जे आयो, नहीं दुर्गतिमां भटकायो । तस आत्म कमल विकसायो, लही लब्धि सकल हरसायो ॥ जिनेश्वर० ॥ ६ ॥

—:०:—

" श्रीनेमिनाथ–स्तवन । "

(राजा कमरीयां खोल रसकी बुंदो परी–ए चाल.)

नेमिनाथ भगवान भवोदधि पार करो ॥ अंचली ॥ ब्रह्मचारी प्रभु जगविख्याता, पुण्यशाली तुम चरणे आता । पापी दर्शन पण नहीं पाता, हुं छुं बन्यो भाग्यवान ॥ भवो० ॥ १ ॥ पशुगणनी प्रभु अरजी धारी, वध थकी तेओने उगारी । निज

रथथी प्रभु पाछो वाळी, दीधुं संवत्सरी दान ॥ भवो० ॥ २ ॥ वर्ष पछी प्रभु दीक्षा धारी, करी क्रिया जीव स्वच्छ थनारी । पचपनमें दिन घाती निवारी, बन्या केवली भगवान ॥ भवो० ॥ ॥ ३ ॥ सकल जीवना प्रभुजी त्राता, आतमने अरपे सुख-साता । सकल चराचर वस्तु ज्ञाता, आपे पद निरवाण ॥ भवो० ॥ ४ ॥ एणी परे पर उपकार करीने, शुक्ल चोथानुं ध्यान धरीने । शैलेशी योग रोध करीने, पहोंच्या प्रभु शिव ठाण ॥ भवो० ॥ ५ ॥ आतम लक्ष्मी प्रभु ! मने आपो, दुःख सकल प्रभु ! मारां कापो । शिवपुरमां लब्धिने स्थापो, हुं एम ागनो अजाण ॥ भवो० ॥ ६ ॥



(२)

(राग–सोरठ.)

भजीले श्रीनेमि मनसुं, आनंद आनंद ज्युं ॥ भजीले० ॥ अंचली॥घडी घडी भजीये,पल पल भजीये,होय एकता ज्युं,नेमि नेमि रटन करतां होय नेमि तूं ॥ भजोले० ॥१॥ जूठा तन है जूठा धन है, शोच मनमें युं, शरण श्री जिनवर का साचा, कर्म काटन कुं ॥ भजोले० ॥ २ ॥ काल फाल है भाल ए जबरी, धार मनमें तूं । अनंगभेदी भाल लगावो, काल भागे ज्यूं ॥ भजीले० ॥ ३ ॥ मोह जाल निहाळ तूं न्यारा, हो जल्दी

इनसुं । तूंही ध्याता ध्येय होगा, लाग जिनवरसुं ॥ भजीले० ॥ ४ ॥ भोगरोग संयोग शोक है, जिनवर भाषित यूं । अखंड नाम जिनवरका जपतां, अखंड होगा तूं ॥ भजीले० ॥ ५ ॥ इंद्रचाप सम दुनिया आतम !, विजली चमकत ज्युं । कमल दल चंचल जलबिंदुं, अथिर जीवन त्युं ॥ भजीले० ॥ ६ ॥ अनुभव रसको अखूट खजानो, मान जिनवरसुं । आण माल मस्तकपें धरके, शिवलंध वर तूं ॥ भजीले० ॥ ७ ॥

———:०:———

" नवसारी मंडन–पार्श्वजिन–स्तवन । "

(राग–पाम्यो पाम्यो पदमणी नारी हो–ए देशी.)

प्यारी प्यारी निजानंदकारी हो, प्रभु पार्श्वप्रतिमा प्यारी ॥ अंचली ॥ दुःख दोहग सब दूर करवाने, विषय विषधर विष हरवाने । जपो जिणंद जयकारी हो ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ नरक निगोदे दुःख अपारी, सहे सकर्म चेतन बहुवारी । पार्श्व सेवो दियो टारी हो ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ कामकुंभ चिंतामणि साचा, कामधेनु ए नित्य नित्य जाचो । सुरतरु सुखकारी हो ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ प्रभु गुण गाये गइ दुग जाये, तस महिमा कहो केम कहाये । सुरगुरु पण गया हारी हो ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ नवसारी मंडन सुखदाया, पुण्ये प्रभु तुम दर्शन पाया । करो भवोदधि पारी हो

॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ आत्म कमल विकसित करवाने, लब्धिसूरि जिनपद वरवाने । जिनशरण जग भारी हो ॥ प्रभु० ॥ ६ ॥

—:o:—

(२)

(गज़ल)

शरण ले पार्श्व चरणोंका, फिर फिर नहीं मिले मौका ॥ अंचली ॥ देवनके देव ये सोहे, इन्होंको देख जो मोहे । हटे तस दुःख दुनियांका, फिर फिर नहीं मिले मौका ॥ शरण० ॥ १ ॥ इन्होंका नाम जो लेते, उन्होंको शिव सुख देते । मारग यह मोक्ष जानेका, फिर फिर नहीं मिले मौका ॥ शरण० ॥ २ ॥ अनादि काल भव भटका, जभी तुं पार्श्वसें छटका । मिला अब वख्त ध्यानेका, फिर फिर नहीं मिले मौका ॥ शरण० ॥ ३ ॥ जिन्होंने सर्पको तारा, नमस्कार मंत्रके द्वारा । वोही तुम तार लेनेका, फिर फिर नहीं मिले मौका ॥ शरण० ॥ ४ ॥ गुण है पार्श्वमें जैसे, नहीं और देवमें ऐसे । यही भवपार लगानेका, फिर फिर नहीं मिले मौका ॥ शरण० ॥ ५ ॥ कहे लब्धि जिनंद सेवो, ऐसा है अन्य नहीं देवो । भवाब्धि पार कर नौका, फिर फिर नहीं मिले मौका ॥ शरण० ॥ ६ ॥

—:o:—

"श्री महावीर जिन–स्तवन।"

(गज़ल)

भजो महावीरके चरणों, छुडा देगा जनम मरणो ॥अंचली॥
जगत में देव आली है, सुरत सबसें निराली है। सुखोंके है वशीकरणो, छुडा देगा जनम मरणो ॥ भजो० ॥१॥ जिन्होंने राज्यको छोडा, स्त्रियादिकसें भो मुंह मोडा। जगत अंधेरके हरणो, छुडादेगा जनम मरणो ॥ भजो० ॥ २ ॥ राग जिनमें नहीं लव लेश, नहीं किसीसें है उनको द्वेष, सेवो ए देव जग तरणो, छुडा देगा जनम मरणो ॥ भजो० ॥ ३ ॥ महा मोहे जगत जित्ता, इन्हें उस्को हरा दित्ता। सदा शिव लब्धिके बरणो, छुडा देगा जनम मरणो ॥ भजो० ॥ ४ ॥

———:o:———

(२)

(राग–ठुमरो)

मंगलमूर्ति महावोर तोरी दिलमें धरुं, आतम आनंद को दाता सदा सिमरुं ॥ अंचली ॥

साखी–कर्म सकल वन काटवा, चंद्रहास सम सार।
मुक्तिमार्गमें जीवको, सार्थवाह आधार ॥
हुं देखी श्री वीर आभो आभो फरुं ॥ मंगल० ॥ १ ॥

ाखी–मम जीवन मम प्राणनाथ, मम मन एकाकार ।
रात दिवस सुपनांतरे, तुंही तुंहो आधार ॥
अब मोह पिशाचसे जरी न डरुं ॥ मंगल० ॥ २ ॥
ाखी–श्री महावीरसे जो मिले, सो होता महावीर ।
मोहमल्लको मार कर, जावे विमला तीर ॥
आत्म कमले भ्रमर ज्युं लब्धि ठरुं ॥ मंगल० ॥ ३ ॥

———:०:———

(३)

(धन्य धन्य वो जगमें नर नार–ए चाल)

भज ले महावीर भगवान, भवसे पार लगानेवाले, सिद्धा-
ाकुल नभ चंद, राणी त्रिशलाके है नंद । काटे जन्म मरणके
द, मोक्षके द्वार पहुंचानेवाले ॥ भज० ॥ १ ॥ शक्र इंद्र दि-
में लाया, तब मेरु प्रभुने हिलाया । ताकत है जिनको अपार,
न्मसे मेरु चलानेवाले ॥ भज० ॥ २ ॥ क्षत्रियकुंड नगर
झार, लिया जन्म प्रभुने धार । तारे है लोक अपार, मोक्ष
वामें पानेवाले ॥ भज० ॥ ३ ॥ जो स्मर लेवे, जिनराज,
। राखे उनकी लाज । सब पूरण कर दे काज, कर्म जडको
हटानेवाले ॥ भज० ॥ ४ ॥ जंबुपुरनगर विशाल, सोहे
जनमंदिर नाल । मूलनायक है प्रतिपाल, ज्ञानलब्धिके पाने-
ाले ॥ भज० ॥ ५ ॥

———:०:———

" श्रीशंखेश्वरमंडनपार्श्व जिन–स्तवनो। "

(थइ प्रेमवश पातळीया-ए चाल।)

श्री पार्श्व जिन गुण दरीया, मेरा दिल प्रभुने हरिया रे ॥ अंचली ॥ शंखेश्वर वरनाम धरायो, भविजीवन मनोहारो। तुम चरणे शिर झुकाई, केइ जीव भवो दधि तरीया रे ॥ श्री पार्श्व० ॥ १ ॥ पुरुषादानीय नाम करमसे, नाम अनेक तुम धारो। जपनेसे होय सुधारो, जापक शुभ गति अनुसरिया रे ॥ श्री पार्श्व० ॥ २ ॥ गत चोवीसी में यह सुंदर, बिंब प्रभुको निपायो। हम पुण्य उदय खूब छायो, तब दरशन जिनका करीया रे ॥ श्री पार्श्व० ॥ ३ ॥ लब्धि धारी मंगलकारी, मेरु उपमा धारो। लक्षण है पारावारो, प्रभु भुवन जयंतजय करीया रे ॥ श्री पार्श्व० ॥ ४ ॥ आत्मकमल निर्लेपीकारक, भव हारक शिवकारो। किये अनंत पुण्य अवधारो, जिसे लब्धिपात्र जिन मिलया रे ॥ श्री पार्श्व० ॥ ५ ॥

---

(२)

(सुंदर सामलीया-ए चाल।)

दर्शन पान किया, शंखेश्वर सुखदाइ। मानुं अमृत पिया। मरण दिया है हटाइ, दर्शन पान किया ॥ अंचली ॥ जो जन

पार्श्वको घटमें ध्यावे, पार्श्वरूप सो भी बन जावे। पार्श्वसे पार्श्व जुदाई ॥ दर्शन० ॥ १ ॥ जीव दया गुण के प्रभु दरिया, षट जीव काय को निर्भय करीया। अति दया घट छाई ॥ दर्शन० ॥ २ ॥ ओवक तन धनसे प्रभु जाने, मनमें तुम बिन और न माने। सो शिवपुरमें सोहाई ॥ दर्शन० ॥ ३ ॥ तुम दर्शनको जब हम आते, शिवपुर का तब अनुभव पाते। लेश भी अति सुखदाई ॥ दर्शन० ॥ ४ ॥ आत्म कमल शिव लक्ष्मी स्थापो, सकल शिव सुख अनुभव आपो। तब सब लब्धि सुहाई ॥ दर्शन० ॥ ५ ॥

———:०:———

(३)

(राग—मालकोश.)

भजो पार्श्व शंखेश दुःख जावे छे ॥ अंचली ॥ जो जन प्रेमे प्रभु गुण गावे, निज दुर्गुण ते मिटावे छे॥ भजो० ॥ १ ॥ प्रेम दृष्टि रस रेलमछेले, भवि कर्म मेल हटावे छे ॥ भजो० ॥ २ ॥ दर्शन नाम रटन नावा दइ, भवोदधि पार तरावे छे ॥ भजो० ॥ ३ ॥ इंद्र चंद्र मुनींदर गणधर, नहीं प्रभु गुण अंत पावे छे ॥ भजो० ॥ ४ ॥ आत्म कमल विकसित करवाने, जिन रवि लब्धि सुहावे छे ॥ भजो० ॥ ५ ॥

———

(४)

(राग-न कररे अरिहा कारो कोयलडी टहुकार)

पार कररे दयासिंधो, डुब रहा मझधार। मारे दुःख तणो नहीं पार, मारे तुम विण नाही आधार रे ॥ पार० ॥ अंचली ॥ थर थर थर थर दिल मुज कांपे, नरक निगोद संभार। जग सुख दुःखका तोल करुं तो, लागे कलेजे कटार रे ॥ पार० ॥ १ ॥ जिनवर शंखेश्वर तुम निरखी, हुओ हृदये विचार। जलत नागको शांत किया तुमे, तुम मोहे शांति दातार रे ॥ पार० ॥ २ ॥ धार युं आयो पार करो मुज, आत्म कमल सुधार। सर्व लब्धि वर संपद पाकर, पाउं शिवपुर सार रे ॥ पार० ॥ ३ ॥

---

(५)

(सामलीया सीदने चालो रे पाये पडुं छुं—ए देशी.)

शंखेश्वर अदभुत पाया रे भावसे वंदुं, श्रीपार्श्व प्रभु सुख-दाया रे, चीर विनंदुं ॥ अंचली ॥ आहाजी ! क्या खूब सोहे, प्राचीन बिंब विकासी, बनी दर्शन अति अभिलाषी रे ॥ भावसे० ॥ १ ॥ इंद्रादिकने भी पूजा, यह बिंब देवविमाने। यह बात प्रसिद्ध केइ जाने रे ॥ भावसे० ॥ २ ॥ मैं बहुत ठिकाने फिर कर, जब आप चरणमें आया। तब मुज मन अति हर्षाया रे ॥

भावसे० ॥३॥ जरासंध जरा जब डारे, पडे यादव निंद विकारे। तुम न्हवणसे ले सुख भारे रे ॥ भावसे० ॥ ४ ॥ हम पर भी प्रभुजी भारी, अति मोहनिंद है छाइ। करी कृपा दियो उडाइ रे ॥ भावसे० ॥ ५ ॥ निज आत्म कमल विकसावे, जो जिन चरणोंको ध्यावे। सो सर्व लब्धि सुख पावे रे ॥ भावसे०॥६॥



(६)

(राग भैरवी.)

शंखेश ! शिवसुख दिलाना होगा, दिलाना होगा दिलाना होगा ॥शंखेश०॥ अंचली ॥ कठोर कर्मोंसे कायल बना हुं, इनको प्रभुजी जलाना होगा। जलाना होगा जलाना होगा ॥ शंखेश० ॥१॥ बे अंत गफलतसे गाफिल बना हुं, अब इस मरज़ को मिटाना होगा। मिटाना होगा मिटाना होगा ॥ शंखेश० ॥ २ ॥ मेरी तेरी के हा ! तीर लगे हैं, खींचकर जखमको रुझाना होगा। रुझाना होगा रुझाना होगा ॥ शंखेश० ॥ ३ ॥ जन्म मरण मोहे पीछे पडे है, पनाहकी ओटे छुपाना होगा। छुपाना होगा छुपाना होगा ॥ शंखेश० ॥ ४ ॥ दुःख सागरमें मैं डुब रहा हुं, ज्ञान यान देके बचाना होगा। बचाना होगा बचाना होगा ॥ शं-खेश० ॥५॥ जादवपतिकी जरा ज्युं कापी, मेरी जरा त्यूं उडाना होगा। उडाना होगा उडाना होगा ॥ शंखेश० ॥ ६ ॥ कर्मोंसे

मैं तुमसे जुदा पडा हुं, इनको हटाकर मिलाना होगा। मिलाना होगा मिलाना होगा ॥ शंखेश० ॥ ७ ॥ क्रोध अग्नि मुजे जला रही है, शांति जल छांटी बुझाना होगा। बुझाना होगा बुझाना होगा ॥ शंखेश० ॥८॥ दगा तकब्बरसें मर रहा हुं, उनको मिटाकर ज़ीलाना रोगा। ज़ीलाना होगा ज़ीलाना होगा ॥ शंखेश० ॥ ९ ॥ तमाह नागिनने है डंक लगाया, सबरका प्याला पिलाना होगा। पिलाना होगा पिलाना होगा ॥ शंखेश० ॥१०॥ जाण आगे केती बाते सुनाउं. शिव शय्यामें लिटाना होगा। लिटाना होगा लिटाना होगा ॥ शंखेश० ॥ ११ ॥ शंखेशपार्श्व जिनेश्वर! आजे, लब्धि को लयमें लगाना होगा। लगाना होगा लगाना होगा ॥ शंखेश० ॥ १२ ॥



(७)

(राग–सारंग)

शंखेश्वर परमेश्वर पारस, पुण्ये दर्श धारिया (२) ॥ अंचली ॥ कामे कंपित काया, क्रोध चंडाल छाया। मान माया स्थान जमाया, वृथा जन्म हारिया (२) ॥ शंखेश्वर० ॥१॥ लोभ सागरमें डूबा, सिरे अनाचार सूबा। रहेनेको अज्ञान कूबा, कर्मोंसे मारीया (२) ॥ शंखेश्वर० ॥२॥ नहीं तप जपमें राचुं, एशो अशरतमें माचुं। वधुं मारुं काम काचुं, केम लहीश पारीया (२) ॥ शंखेश्वर० ॥ ३ ॥ जिन अवलंबन आपो, बधां मारां दुःखो

राखुं खरो तुमथी दापो, बीजा देवो टारीया (२)॥ शं-
॥४॥ काल अनंत खोया, जब नहीं नाथ जोया । अब
थ धारी, भव भ्रमण वारीया (२) ॥ शंखेश्वर० ॥५ ॥
ादे परखुं, रूप जिणंद सरखुं । व्यवहारे भेद निरखुं, न
। वारीया (२) ॥ शंखेश्वर० ॥६॥ सिंह गर्जारव कर लो,
भाव हर ला, निज प्रभु रूप निरखी, लहुं लब्धि
। ॥ शंखेश्वर० ॥ ७ ॥

———:०:———

नऊगिरिमंडन श्री आदिजिन-स्तवनो। "

ाम नाम रस पीजे प्याला पीजे रे-ए चाल.)

र्श ऋषभ जिन कीजे भवियां, कोजेरे कीजेरे कोजे मोक्ष
। अंचली ॥ तरणि प्रतापे तिमिर विनाशे, तिम गिरि-
ःख छीजेरे छीजेरे छीजे मोक्ष लीजे ॥ १ ॥ गोहत्यादि
नेवारे, गिरि दीठे काज सरीजेरे सरीजेरे सरीजे मोक्ष
॥ २ ॥ आनंदकारी भवोदधि तारी, प्रभु देखे मोह खो-
ोजेरे खीजे मोक्ष लीजे ॥ ३ ॥ जगदुःख वारी शिव
ापे, गिरिभक्तिए मन भीजेरे भीजेरे भीजे मोक्ष लीजे
। आतम लक्ष्मी कमल निवासो, लब्धि भ्रमर मन रीजेरे
रीजे मोक्ष लीजे ॥ ५ ॥

———

(२)

(चाल—जावोजी जावो किस नादानको भेकाने आये.)

आवोजी आवो गिरिराजको दिल ध्यानेवाले, कर्म कटाने वाले, भवदुःख मिटानेवाले, पुरे पुण्यवान् शिर जिनराज को झुकाने वाले ॥ आवोजी० ॥ १ ॥ गिरि ए सबमें मोटा, मोह-राय के मुखपर सोटा । खोटे दुनियांके गंदे धंधेको हटनेवाले ॥ आवोजी० ॥ २ ॥ यहांपर शुद्ध भाव लावे, त्रीजे भव सिद्धि पावे । पूर्व पुण्ये पुण्यगिरिके गुण गानेवाले ॥ आवोजी० ॥ ३ ॥ तीर्थ परमार्थ आपे, कर्मोंका फंद कापे । गिरि फरसनसे सिद्धि स्पर्शको मिलानेवाले ॥ आवोजी० ॥ ४ ॥ आनंद लब्धि होये, नयन कमलसे जोये । ऐसे गिरिराजसे शिवराज के सुख पानेवाले ॥ आवोजी० ॥ ५ ॥

---

(३)

(गजल—भेरवी.)

में भेटया आदिनाथजी, हरष अपार । हरष अपारी आ-नंदकारी, राग रोग हर ववाथजी ॥ हरष अपार ॥ अंचली ॥ सिद्धाचल तीरथ वर सोहे, निकट भवी जन मनको मोहे । कर्म भर्मका कटक विछोहे, संगकर शिवपुर साथजी ॥ हरष० ॥ १ ॥

तीरथ ए कंचनगिरि सारो, दुःखी जीव दुःखो दळनारो। जन्म मरण विपत् हरनारो, ए तीरथ वर नाथजी ॥ हरष० ॥ २ ॥ लाख चाराशी योनि भटक्यो, गर्भोमें बहु उंधो लटक्यो। करमोए नरकोमें पटक्यो, झालो अब मुज हाथजी ॥ हरष० ॥३॥ मोहे मार्यो निज गुण हार्यो, विषय विकार भट्ठीमां भार्यो। कोइए नहीं त्यां मुझने सार्यो, तारो दइ मुज बाथजी ॥ हरष० ॥ ४ ॥ वळी प्रभु मुज ममताए मार्यो, मनुष्य जींदगी एळे हार्यो। राग द्वेष गलफांसो डार्यो, हुं डुब्यो भवोदधि पाथजी ॥ हरष० ॥ ५ ॥ अब प्रभु हुं अति आनंद पायो, तुम चरणोमें शिर झुकायो। दुःख सघरो अब दूर नसायो, मल्यो मने शिव सार्थजी ॥ हरष० ॥६॥ संवत निधि मुनि निधींदु कालि, आदिजिनकी मूरत विशाली। फागण सुद सातम दिन भाली, हुओ लब्धि कृतार्थजी ॥ हरष० ॥ ७ ॥



" गिरनारमंडन श्री नेमिजिन-स्तवनो।"

(राग—माढ.)

नेमिजिन प्यारा, कल ब्रह्मधारा, किजीये दुःखोद्धार, प्रभु शिवसुखकारा, भवदुःखहारा, आतम तारा किजीए दुःखोद्धार ॥ अंचली ॥ दुःखोद्धारकी शक्ति तुम्हारी, अपूर्व प्रभु जाण। मारग दुःख उवेखी आयो, दुःख तिमिर हर भाण रे ॥ नेमि०

॥१॥ नेह नजर से निहाली दादा, दीजीए केवल दान । अनादि के आवरणो टाली, किजीए निज समान रे ॥ नेमि० ॥२॥ पशुओंका प्रभु सुनी पूकारा, छुडाये बंधन तास । मैं प्रायः पशु सरखा स्वामी, कर्म तोडी पुरो आश रे ॥ नेमि० ॥३॥ इस गिरनार उपर प्रभु पाये, दीक्षा नाण निर्वाण । दास तमारो ते भूस्पर्शी, खाली रहे न सुजाण ! रे ॥ नेमि० ॥४॥ राजेमती रंभासी नारी, त्यागी तुमे जिस दिल । वो दिल प्रभु जो मुजको दियो, तो मानुं मिला अखिल रे ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ संवत निधि मुनि निधांदु काले, चैत्री पूनमके दिन । आतमराज लेनेको लब्धि, श्रीनेमि चरणे लीन रे ॥ नेमि० ॥ ६ ॥

———:o:———

(२)

(सार आ संसारमां न जोयो—ए चाल.)

नेमिजिणंद मुख जोयो, मैं महा पुण्य प्रतापे ॥ नेमि० अंचली ॥ बाल ब्रह्मचारी, ब्रह्मपद धारी, दर्श करी मैं दुःख खोयो ॥ मैं महा० ॥ १ ॥ गिरनार सुंदर धाम पसंद करी, इहां आइ कर्म मेल धोयो ॥ मैं महा० ॥ २ ॥ धन्य जन्मारो जेनजी जुहार्या, मोह चरट हवे रोयो ॥ मैं महा० ॥ ३ ॥ आत्म कमल ज्यां लब्धि विराजी, नेमि चरण चित्त मोयो ॥ मैं महा० ॥ ४ ॥

———

" भोयणीमंडन श्री मल्लीनाथ जिन-स्तवन।"

(घनघटाभूघन रंगछाया, नवखंडा-ए राग)

भोयणी मंडन सुखदाया, श्री मल्लीनाथ महाराया ॥ ए ांकणी॥ प्रभु देश विदेश गवाया, जस गुण का अंत न आया, ोविदे तीर्थ दिपाया, ए अचरिज महिमा पाया, कुंभनृपति ल सोहाया ॥ कुंभ० ॥ श्री मल्ली० ॥ १ ॥ मिथिला नगरी भु पाया, श्री प्रभावती कुख जाया, छ नृपकी छुडाइ माया, ; उपदेश मोह हटाया, ज्ञान दिया गंदी है काया ॥ ज्ञान० श्री मल्ली० ॥२॥ कुंभ लंछन चरणे धराया, निर्लांछन जीवन ताया, सो पचपन सहस कहाया, निर्ममता भाव ठराया, द्भूत केवल जिन पाया ॥ अद० ॥ श्री मल्ली० ॥ ३ ॥ तपुण्य भारत ए कहाया, श्रीजिन चरणो ज्यां सुहाया, जसने जिन दर्शन पाया, धन्य जन्म भूमि माय ताया, तस न्म सफल ही कहाया ॥ तस० ॥ श्री मल्ली० ॥ ४ ॥ जिन-डिमा जिन है गणाया, इम रायपसेणी जणाया, सूर्याभ अधि-ार मनाया, श्रीतीर्थपतिकी वाया, श्री गणधर ग्रंथे बताया श्री गण० ॥ श्री मल्ली० ॥ ५ ॥ यश 'कीर्ति' गुण अति ाया, सब 'लब्धि' लहे जिनराया, जिन भजे सो 'मंलग' पाया, ान-'किर्त्ति' ध्वज फरकाया, 'मेरु' सम करण वहाया ॥मेरु०

॥ श्री मल्ली० ॥ ६ ॥ ह्रस्वाक्षर 'लक्षण' ठाया, प्रभु शिव रामें सिधाया, भव अंकूर जडसे जलाया, प्रभु 'भुवन' 'जयंत' जय पाया, दे 'शांति' जिणंद दिल ध्याया ॥ दे शांति० ॥ श्री मल्ली० ॥७॥ जिन भानु गुण घट छाया, मुज आत्म कमल विकसाया, निज लब्धि लक्ष्मी पद ठाया, श्री मल्लीनाथ गुण गाया, हुए पवित्र मन वच काया ॥ हुए० ॥ श्री मल्ली० ॥ ८ ॥

"पानसरमंडन श्री महावीरजिन—स्तवनो।"

(मारी सजनी तुं क्यां रमी आवी रजनी–ए राग.)

वीर जिनजी, करुं अरजी थइ आधीनजी, दुःखथी छोड छोड छोड। अरे! प्राणी, तूं अमथो ईम गभरावे, बल जोड जोड जोड ॥ ए अंचली ॥ कृष्ण पिशाच, छाती पर बेठो, मारण लाग्यो छे काती। तुम विना कोइ शरण न म्हारे, कांपी रही छे छाती ॥ दुःखथी छोड छोड छोड ॥ १ ॥ निज गुण नामी मंत्र जप्याथी, नाश थशे तुज भीति। मान जीव! तूं शरण पोतानुं, ए छे आगम रीति ॥ बल जोड जोड जोड ॥ २ ॥ खरुं कथन जिनराज! तमारुं, पण करतां अकळावे। प्रमाद भूतडो वचमां आवी, करो दूर जेम हट जावे ॥ दुःखथी छोड छोड छोड ॥ ३ ॥ वीर्य विकाशी देव प्रबल छे, तप जपथी वश कीजे।

आगमवाद आरूढ बनीने, झट निर्भय पद लीजे ॥ बल जोड जोड जोड ॥ ४ ॥ अति उदार ए मंत्र तमारो, हृदय कमल लियो धारी । दर्शनथी हुं प्रसन्न थयो छुं, आतम लब्धिकारी दुःखथी छोड छोड छोड ॥ ४ ॥

---

(२)

(फूलनी पांखडी ल्यो प्राण-ए राग.)

भजी ल्यो वीर सुखनी खाण, खरी करी प्रभु ओळखाण ॥ भजी० ॥ ए आंकणी ॥ प्रिय पार करे भवी भवथी, डुब्युं तमारुं वहाण । विमल कमल जिम निर्मल जिनजी, पाम्या पद निर्वाण ॥ भजी० ॥ १ ॥ सिद्धारथ नंदन दुःख खंडन, वहो शिरे तस आण । जे आणा नहीं धरे जिणंदनी, ते रखडे भव-राण ॥ भजी० ॥ २ ॥ क्षत्रिकुंडमां जिनजी जाये, पावाथी मुक्ति प्रयाण । ते जन जल्दी मुक्ति पामे, जे माने तस वाण ॥ भजी० ॥ ३ ॥ वीर नाम ए मंत्र चमत्कर, आपे केवल नाण । विधि, सहित जे दिलमां राखे, गोयमनुं आभाण ॥ भजी० ॥ ४ ॥ आत्म कमल विकसावे वहालो वीर विभु जग भाण । अठ्ठावीश लब्धि आपीने, पहोंचावे शिव-ठाण ॥ भजी० ॥ ५ ॥

" वामजमंडन श्री शांतिजिन-स्तवन। "

(हर लिया हर लिया हर लिया रे-ए राग.)

वश किया वश किया वश कियारे मेरा मनवा, मेरा मनवा शांतिजिने वश कीयारे-मेरा मनवा ॥ अंचली ॥ वामज मंडन जगदुःख खंडन, भरपूर भक्तिसे भज लिया रे ॥ मेरा० ॥ १ ॥ निरागी निर्दूषी देखी, तामसी तमाम मैंने तज दिया रे ॥ मेरा० ॥ २ ॥ पंचम काले घोर अंधेरो, जिन दर्शन तेजे हर लिया रे ॥ मेरा० ॥ ३ ॥ भाग्यहीन ज्युं भूखे जीवने, खाय सुखाद्य अमृत पिया रे ॥ मेरा० ॥ ४ ॥ त्युं मैं आज तुज दर्शसे जानुं, भूख हरी सुखामृत पिया रे ॥ मेरा० ॥५ ॥ चौसठ सहस नारी निवारी, षट खंड राज्य तुमे तज दिया रे ॥मेरा० ॥ ६ ॥ अद्भुत त्याग यह प्रभुजी तुम्हारो, देख त्रिजग चित्त चमकिया रे ॥ मेरा० ॥ ७ ॥ लेइ चारित्र तुम्हे केवळ पाइ, जगत सुधारो शिव वरलिया रे ॥ मेरा० ॥८॥ यह गुण आत्म कमल मुज स्थापो, मानुं लब्धि उपकृत किया रे ॥ मेरा० ॥ ९ ॥

" शेरीषामंडन श्री पार्श्वजिन-स्तवन । "

(राग—बढंस)

मूर्ति पार्श्वजिनंद दुःखहरणी, भवि चक्रवाक प्रसन्न कर तरणी ॥ अंचली ॥ शेरीषामें प्रभु सुख करणी, पाप तिमिर हर

शिवपुर सरणी। जो सेवे सो शिवसुख लेवे, आतम आनंद शस्य-कर धरणी ॥ मूर्ति० ॥ १ ॥ आज विलोकी हरस भयो अति, जिनवर शिवधर शरीर वरोरी। भाग्य उदय शिव संपतकारी, भारो मानूं भवजलधि तरोरी ॥ मूर्ति० ॥ २ ॥ चकोर चंद्र ज्यूं चाह धरी जो, अहनिश जिनवर चरण चह्योरी। सो प्रभु कृपा कटाक्षसे प्यारे !, अनंत जन्मको कर्म दह्योरी मूर्ति० ॥ ३ ॥ भटक भटक महा पुण्य प्रभावे, शुद्ध निरंजन नाथ लह्योरी। जन्म मरणकारी अब मानूं, द्वेषी कुदेव कुजाल दह्योरी ॥ मूर्ति० ॥४॥ आतम कमल विकाशी व्हाला, लक्ष्मो लब्धिका वास धरोरी। जनम मरणका फेरा निवारी, निज सेवकको पार करोरी ॥ मूर्ति० ॥ ५ ॥



" मातरमंडन श्री सुमतिजिन–स्तवन । "

(राग–आशाउरी.)

आवो ध्यावो साचा जिननाथ (२) ॥ अंचली ॥ मातर मंडन जिनजी जुहारो, भवि जन थवाने सनाथ ॥ आवो० ॥ १ ॥ सुमतिजिनवर कुमति कापी, मेळवी आपे शिवसाथ ॥ आवो० ॥२॥ नाम–आकृति–द्रव्य–भावथी, पार करे भव पाथ ॥आवो० ॥ ३ ॥ उपशम करवा रोग राइने, मानो धन्वंतरी क्वाथ

॥ आवो० ॥ ४ ॥ आतम सुखकर जिनवर ध्यावत, टळे माया नर बाथ ॥ आवो० ॥ ५ ॥ ध्यान कमल में लब्धि-भ्रमरो, हुए ग्रहे जिन हाथ ॥ आवो० ॥ ६ ॥

" चाणस्मा मंडन श्रीभटेवापार्श्वनाथ-स्तवन। "

(मिली कौन शोकन तुमे स्याम किसविध आंख-लडी-ए राग.)

भजुं किस तरे तुझे पास, शुद्ध बुद्ध नाही जरी ॥ए अंचली॥ मोह मदिरासे चकचूरा, होकर हूआ हेरान। करी कृपा जगा दो ज्योति, होय हौंस पूरी ॥ भजुं० ॥ १ ॥ तुम प्रभु ! जगमें तारक साचे, कोइ न तुझ समान। मैं ढुंढ लिया जग सारा, कहीं न निगाह ठरी ॥ भजुं० ॥ २ ॥ परमकला प्रभातमकारा, चाणस्मामें सार। मिला पास भटेवा प्यारा, नमुं नेह धरी ॥ भजुं० ॥ ३ ॥ अकल स्वरूपी तुमे सुखदाता, भव जलधिमां जहाज। मैं पुण्य अनंतसे पाया, याचुं आश धरी ॥ भजुं० ॥ ४ ॥ आत्म कमलमें आतम-लक्ष्मी, देकर करो निहाल। निज लब्धि सेवकको दीजे, होउं शिवचरी ॥ भजुं० ॥ ५ ॥

" कालीयावाडी मंडन श्रीशांतिजिन–स्तवन।"

(कनैया मोरा रुडने जमीन उत्ते लग्गा–ए राग.)

जिणंदा तोरा, पुण्ये मैं दरिसण दिट्ठा ॥ अंचली ॥ अचिराजीको नन्दन साहिब, स्वामी सबसे वरिट्ठा। तुज मुख देखे आनंद होवे, भागे पाप अनिट्ठारे ॥ जिणंदा० ॥ १ ॥ घूमता फिरता सब दुनियामें, तुमसा देव न जिट्ठा। क्षण मात्र प्रभु ध्यान करणसे, कटे करम कलिट्ठा रे ॥ जिणंदा० ॥ २ ॥ कृतयुगादि काल न चाहुं, तुज भक्ति हीण कीट्ठा। तुज भक्ति–युत अधिक मानूं, कलियुग पण इट्ठा रे ॥ जिणंदा० ॥ ३ ॥ गाम कालीयावाडी मांही, धाम तुम्हारा सिट्ठा। जो भवी भावे दरसण पावे, होय हृदय तस हिट्ठारे ॥ जिणंदा० ॥ ४ ॥ तुम दरिसणसे मानूं साहिब, पाप पूर मुज निट्ठा। आत्म कमल लब्धि विकसावो, स्वामि ! मुज गरिट्ठा रे ॥ जिणंदा० ॥ ५ ॥

———o———

" भरुच मंडन श्रीमुनिसुव्रतस्वामीनुं–स्तवन।"

(होना दि[illegible] तो क्या दिलको आराम–ए देशी.)

(राग–भैरव.)

नाथ सुखकार प्यारे दिलसे लो धार, दिलसे लो धार करे भवसे ए पार। नाथ सुखकार प्यारे दिलसे लो धार ॥

अंचली ॥ ध्यावो जो ध्यान धरी दुखडां निवारे, दुःख आवे न क्यारे लगारे लगार ॥ नाथ० ॥

साखी—

श्री मुनिसुव्रत सिमरतां, टळे कोटी भव पाप ।
भाव भेद प्रकाशीने, लहे जिनंद पद आप ॥
सुख पावे ओ ध्यारो ! अपारे अपार ॥ नाथ० ॥ १ ॥

साखी—

भृगुपुरमां अश्वने, पोहोंचाड्यो सुर धाम ।
ते श्री जिनपद सेवतां, सरशे तुम पण काम ॥
टळी जशे बधा ए आकारे विकार ॥ नाथ० ॥ २ ॥

साखी—

आत्म कमल जिन सूर्यथी, जो भवि विकसित थाय ।
मिचायुं नवि मिचसे, रवि गुण लब्धि सुहाय ॥
थशे सर्व सुखोनो आधारे आधार ॥ नाथ० ॥ ३ ॥

———:*:———

इतिश्री आचार्य श्रीमद् विजयलब्धिसूरि विरचिता
श्रीमज्जिनगुण मणिमाला समाप्ता ।





